A Daily News Magazine
भोपाल
शनिवार, 9 अगस्त, 2025
भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 22, अंक 331, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

रक्षाबंधन पर्व...

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने नर्मदा वाटिका उज्जैन में बहनों से राखी बंधवाई।

सुप्रभात

राखी कोई चीज़ नहीं है
यह अमर प्रेम का धागा है
जिस भाई की बहिन नहीं है
सचमुच बड़ा अभागा है।
बचपन खेल खेल संग बीता
आपस में बड़ा दुलार था
छोटी मोटी नोंक-झोंक थी
लेकिन, अंतर्मन प्यार था।
रक्षाबंधन पर बहना
भूल सभी को जाती है
बस, भाई पर ही वो अपना
रक्षा विश्वास जताती है।
रक्षाबंधन का त्यौहार
अनौखी रंगत लाता है
भाई बहन संग सारे घर में
वो खुशियां फैलाता है।

– ओम प्रकाश वर्मा

भारत ने अमेरिका से...

हथियार-विमानों की खरीद रोकी!

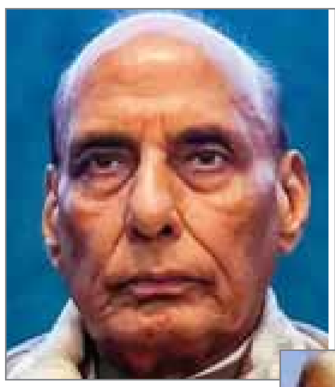

नई दिल्ली (एजेंसी)। टैरिफ विवाद के बीच भारत ने अमेरिका से नए हथियार और विमान खरीद की योजना रोक दी है। न्यूज एजेंसी रॉयटर्स ने 3 भारतीय अफसरों के हवाले से यह जानकारी दी है। ट्रम्प के 50 फीसदी टैरिफ लगाने के बाद इसे भारत की पहली ठोस प्रतिक्रिया माना जा रहा है। रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक भारतीय रक्षा मंत्री आने वाले हफ्तों में डिफेंस डील के लिए अमेरिका जाने वाले थे। अब यह दौरा रद्द कर दिया गया है। जानकारी के मुताबिक भारत अमेरिका से निगरानी विमान, स्ट्राइकर कॉम्बैट व्हीकल्स और जैवलिन एंटी टैंक मिसाइल खरीदने वाला था। टैरिफ के चलते यह सौदा भी रोक दिया गया है। न्यूज एजेंसी रॉयटर्स ने

रक्षा मंत्री का अमेरिका दौरा भी रद्द, सरकार ने रिपोर्ट खारिज की

बताया कि भारत के रक्षा मंत्रालय और पेंटागन ने इस पर कोई बयान नहीं दिया है। वहीं, एजेंसी ने डिफेंस मिनिस्ट्री के सोर्स से बताया कि ये रिपोर्ट गलत और झूठी हैं। उन्होंने कहा कि भारत-अमेरिका के बीच डील का प्रोसेस जारी है। अफसरों ने रॉयटर्स को बताया कि इन सौदों को रोकने के लिए अभी लिखित आदेश नहीं हुए हैं। हो सकता है कि टैरिफ विवाद सुलझने के बाद इस पर फैसला लिया जाए। अफसरों के मुताबिक, भारत सरकार बातचीत करती रहेगी।

ब्रिटेन के गुरुद्वारों में खालिस्तान शब्द रखने की अनुमति

चैरिटी आयोग ने कहा-

ये कोई राजनीतिक प्रचार नहीं, इसमें नियमों का उल्लंघन नहीं

जालंधर (एजेंसी)। ब्रिटेन के चैरिटी आयोग ने स्पष्ट किया है कि गुरुद्वारों में खालिस्तान शब्द वाले बोर्ड या बोर्ड रखना देश के चैरिटी नियमों के खिलाफ नहीं है। यह फैसला स्लौ स्थित श्री गुरु सिंह सभा गुरुद्वारे के मामले की विस्तृत जांच के बाद आया है। जहां लगभग 5 दशक

से दो खालिस्तान बोर्ड लगे हुए हैं। यह मामला 2019 में तब उठा था जब एक भारतीय पत्रकार ने गुरुद्वारे के अंदर लगे बड़े खालिस्तान बोर्ड की शिकायत आयोग से की थी। चैरिटी आयोग (ब्रिटेन में धार्मिक स्थलों की निगरानी करता है) ने इस पर जांच शुरू की थी। आयोग के अनुसार किसी राजनीतिक दल या राज्य का प्रचार करना उनके दिशानिर्देशों का उल्लंघन है। 10 मार्च तक बोर्ड हटाने का अल्टीमेटम दिया था।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव तामोट, रायसेन में रक्षाबंधन महोत्सव में हुए शामिल

उद्योग हमारे लिए मंदिर और देवालय के समान हैं : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि उद्योग हमारे लिए मंदिर और देवालय के समान हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में देश का परिदृश्य बदला है, भारतीय अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ते हुए 15वें से चौथे स्थान पर पहुंच चुकी है। मध्यप्रदेश का जैविक कपास, चीन, जापान और वियतनाम से लेकर स्पेन तक एक्सपोर्ट हो रहा है। राज्य सरकार कृषि के साथ-साथ औद्योगिक गतिविधियों के विस्तार और निवेश प्रोत्साहित करने के लिए भी हरसंभव प्रयास कर रही है। दस अगस्त को रायसेन में ही रेल कोच बनाने के लिए कारखाने का भूमिपूजन होने जा रहा है। धार में प्रधानमंत्री श्री मोदी 25 अगस्त को टेक्सटाइल उद्योग के लिए पीएम मित्र पार्क का भूमि-पूजन करेंगे। इससे मालवा और आसपास के जनजातीय अंचल के एक लाख से अधिक युवाओं को रोजगार मिलेगा। प्रदेश में जारी औद्योगिक विकास की गतिविधियां प्रधानमंत्री श्री मोदी के स्वदेशी के भाव को चरितार्थ करने का माध्यम हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी भोपाल को जल्द ही मेट्रो ट्रेन की सौगात भी देंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव औद्योगिक क्षेत्र तामोट, जिला रायसेन में सागर मैन्युफैक्चरर्स प्राइवेट लिमिटेड की इकाई में आयोजित रक्षाबंधन महोत्सव कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने टैक्सटाइल यूनिट का भ्रमण कर यहां टैक्सटाइल प्रोडक्शन का अवलोकन भी किया। कार्यक्रम में सागर ग्रुप की महिला कर्मचारियों ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव को राखी बांधकर पवित्र रक्षाबंधन का त्यौहार मनाया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कार्यक्रम स्थल पर बड़ी संख्या में उपस्थित बहनों के बीच जाकर पुष्प वर्षा की और बहनों को उपहार भेंटकर आशीर्वाद लिया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत सरकार की लड़ाई किसानों की मेहनत के लिए है। किसान कपास, सब्जी और फसलें उगाते हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी देश के किसान, गरीब, मजदूरों के लिए लड़ाई लड़ रहे हैं। उन्होंने स्वदेशी अपनाने का संकल्प लेने का आह्वान किया है, सभी प्रदेशवासी उनके साथ हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार बहनों की खुशहाली के लिए निरंतर कार्य कर रही है। लाड़ली बहनों को रक्षाबंधन के अवसर पर 1500 रुपए का विशेष तोहफा दिया गया है। रोजगार परक उद्योगों में कार्य करने वाली बहनों को प्रतिमाह 6000 रुपए की वेतन सहायता दी जा रही है। राज्य सरकार प्रदेश के सभी वर्गों की समृद्धि के लिए कार्य कर रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सागर ग्रुप ने आसपास के गांवों के लोगों को रोजगार से जोड़ा है। इकाई में काम करने वाले लोगों के लिए आवास और भोजन की व्यवस्था करने पर उन्होंने सागर ग्रुप को बधाई दी। सागर ग्रुप में कुल 8000 कर्मचारी कार्यरत हैं, जिनमें 5000 महिलाकर्मी हैं।

खाटूश्याम मंदिर से केवल 1.5 किलोमीटर दूर होगी ट्रेन

सीकर (एजेंसी)। खाटूश्याम (सीकर) में रेलवे कनेक्टिविटी के लिए काम शुरू हो गया है। पिछले साल रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने इस प्रोजेक्ट की घोषणा की थी। बुधवार को लोकसभा में रेल मंत्री ने बताया कि रींगस–खाटूश्यामजी (17.49 किमी.) नई रेललाइन परियोजना पर करीब 254 करोड़ रुपए खर्च होंगे। साल 2025–26 के लिए 43 करोड़ रुपए आवंटित किए गए हैं। भूमि अधिग्रहण का काम शुरू हो चुका है। बाबा श्याम की नगरी में बनने वाला रेलवे स्टेशन मंदिर से केवल 1.5 किलोमीटर की दूरी पर होगा। मॉर्डन फैसिलिटी वाले इस स्टेशन पर शेखावाटी संस्कृति की झलक भी दिखेगी। अब प्रोजेक्ट के लिए 115 हेक्टेयर जमीन का अधिग्रहण होना है।

भोपाल में आज फ्री सफर कर सकेंगी महिलाएं

● रक्षाबंधन पर नगर निगम ने दिया गिफ्ट
रात 9 बजे तक नहीं लगेगा किराया

भोपाल (नप्र)। भोपाल में रक्षाबंधन पर महिलाएं रात 9 बजे तक बसों में फ्री में सफर कर सकेंगी। 'शहर सरकार' ने बहनों को सिटी बसों में फ्री में घूमने का यह गिफ्ट दिया है। पहले कुल 25 रूट पर 368 सिटी बसें दौड़ती थी। इनमें से ढाई सौ से ज्यादा बसें पिछले एक साल में बंद हो गई। ऐसे में शेष बची 80 बसों में शनिवार को महिलाएं सफर कर सकेंगी।

महापौर मालती राय ने बताया हर साल रक्षाबंधन पर बहनों को भाई को राखी बांधने के लिए एक जगह से दूसरी जगह पर जाना पड़ता है। बहनों को नगर निगम की तरफ से सौगात दी जाती है। इस बार भी यह सौगात दी गई है। बहनों से किराया नहीं लिया जाएगा।

8 रूट पर दौड़ रही बसें–पहले सिटी पहले पूरे शहर को कवर करती थी। इनमें बैरागढ़ के पास चिरायु हॉस्पिटल से लेकर अवधपुरी, न्यू मार्केट, अयोध्या बायपास, करोंद, एमपी नगर, मिसरोद, मंडीदीप, भोजपुर, होशंगाबाद रोड, कटारा हिल्स, बैरागढ़ चिचली, कोलार रोड, गांधीनगर, बंगरसिया, रायसेन रोड, लांबाखेड़ा, नारियलखेड़ा, भौंरी समेत 25 रूट शामिल हैं, लेकिन अभी 8 रूटों पर ही बसें दौड़ रही है। ऐसे में महिलाओं को इन्हीं रूटों पर मुफ्त में सफर करने को मिलेगा।

एक दिन में 50 हजार यात्री करते हैं सफर–भोपाल में जब सभी बसें दौड़ती थीं, तब एक दिन में डेढ़ लाख से ज्यादा लोग सफर करते हैं। इनमें 40 प्रतिशत तक यानी करीब 60 हजार महिला यात्री शामिल थीं। वर्तमान में यात्रियों की संख्या करीब 50 हजार है। इनमें से आधी महिला यात्री हैं। किराए के रूप में उन्हें न्यूनतम 7 और अधिकतम 42 रुपए लगते हैं।

नदी में नहाते समय डूबे चार दोस्त, सागर में पिकनिक मनाने पहुंचे थे 5 युवक

सागर (नप्र)। सागर जिले के सानौधा में रक्षाबंधन से एक दिन पहले चार दोस्त बेबस नदी में नहाते समय डूब गए। 5 युवक रिछावर घाट पर पिकनिक मनाने पहुंचे थे। चार दोस्त पानी में उतरे थे। घाट में मौजूद लोगों ने उन्हें डूबता देख शोर मचाया, लेकिन तब तक वे गहरे पानी में चले गए। घटना शुक्रवार शाम की है। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। स्थानीय गोताखोरों की मदद से सर्चिंग शुरू करवाई। वहीं एसडीईआरएफ की टीम को भी बुलाया गया। पुलिस, ग्रामीण और एसडीआरएफ की टीमें सर्च ऑपरेशन में जुटी हुई थी।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c | न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 9 अगस्त 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

लूला-मोदी की एक घंटे बात, पुतिन से डोभाल की मुलाकात

भारत ने ट्रंप को दिखा दिए हैं इरादे, रूस और ब्राजील हैं साथ

नई दिल्ली (एजेंसी)। ट्रंप के टैरिफ वॉर से मची खलबली के बीच वैश्विक मंच पर भारत अपनी स्वतंत्र विदेश नीति और रणनीतिक स्वायत्तता को और मजबूत कर रहा है। गुरुवार को भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से मॉस्को में मुलाकात की।

इसके कुछ ही देर बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज इनासियो लूला डी सिल्वा के साथ एक घंटे की फोन पर बातचीत ने साफ कर दिया है कि भारत अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के टैरिफ दबाव के आगे झुकने वाला नहीं है। ट्रंप द्वारा भारत पर रूसी तेल खरीद को लेकर लगाए गए 50 फीसदी टैरिफ के जवाब में भारत न केवल अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा कर रहा है, बल्कि वैश्विक साझेदारों के साथ मिलकर एक पुख्ता रणनीति भी बना रहा है।

● **रूस के साथ रणनीतिक साझेदारी को बल-** राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने मॉस्को में रूसी अधिकारियों, विशेष रूप से रक्षा मंत्री सर्गेई शोइगु और फिर राष्ट्रपति पुतिन के साथ मुलाकात की। इस दौरान डोभाल ने भारत-रूस के बीच विशेष और दीर्घकालिक रिश्तों पर जोर दिया। उन्होंने पुतिन की भारत यात्रा की पुष्टि की, जो इस महीने के अंत या साल के अंत तक हो सकती है। यह दौरा ऐसे समय में महत्वपूर्ण है, जब भारत और रूस रक्षा, ऊर्जा, और व्यापार जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर काम कर रहे हैं। डोभाल ने रूस के साथ रक्षा सहयोग को और मजबूत करने की बात कही, जिसमें एस-400 मिसाइल डिफेंस सिस्टम की बात होगी।

सिंधिया ने थामा दिग्विजय का हाथ, मंच पर लेकर गए

भोपाल में एक कार्यक्रम में मिले दोनों नेता, सभागार में तालियां गूंज उठीं

भोपाल (नप्र)। भोपाल में शुक्रवार को एक निजी स्कूल के शुभारंभ के मौके पर केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया और पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह की मुलाकात राजनीतिक गलियारे में चर्चा में रही। इस स्कूल के शुभारंभ कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सिंधिया थे।

कार्यक्रम में सिंधिया पहुंचे तो दिग्विजय सिंह मंच से नीचे बैठे थे और तब राजनीतिक गिले शिकवे को दरकिनार करते हुए सिंधिया खुद मंच से नीचे आए और पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय को लेकर मंच पर गए। सिंधिया की इस पहल का वीडियो अब वायरल हो रहा है।

इसे लेकर कहा जा रहा है कि विरासत का अर्थ केवल संपत्ति नहीं, संस्कारों और अनुभवों का हस्तांतरण भी है। राजनीतिक गलियारे में यह भी बात सामने आई है कि भले विचारधारा अलग हों, सिंधिया दिल से आदर भाव रखते हैं।

पहले झुककर प्रणाम फिर हाथ पकड़कर ले चले- सकारात्मक राजनीति का यह उदाहरण तब देखने को मिला जब भोपाल में स्कूल के लोकार्पण के कार्यक्रम में मंच पर आते ही ज्योतिरादित्य सिंधिया ने राजनीतिक मतभेदों से ऊपर उठकर सामने बैठे पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह के पास जाकर स्नेह पूर्वक अभिवादन किया। इसके बाद उनका हाथ थामा और उन्हें मंच पर साथ लेकर आए। इस दौरान पूरे सभागार में तालियां गूंज उठीं।

चलती बस पर पेड़ गिरा, 5 की मौत

अंदर फंसी महिला बोली-हम मर रहे, आप वीडियो बना रहे

बाराबंकी (एजेंसी)। यूपी के बाराबंकी में रोडवेज बस पर पेड़ गिर गया। हादसे में 5 लोगों की मौत हो गई। इनमें एक टीचर और दो ब्लॉक की अधिकारी समेत 4 महिलाएं शामिल हैं। एक की हालत गंभीर है। हादसे से जुड़ा एक वीडियो सामने आया है,

जिसमें बस में फंसी एक महिला वीडियो बना रहे युवक पर भड़कती नजर आ रही है। महिला ने कहा- हम मर रहे हैं और आप वीडियो बना रहे हैं। अगर आकर पेड़ की डाल हटवाने में मदद करते, तो हम लोग बाहर निकल आते। 60 लोगों से भरी बस बाराबंकी से हैदरगढ़ जा रही थी। शुक्रवार सुबह 11 बजे हरख चौराहे के पास बस के सामने एक जानवर आ गया। उसे बचाने के चक्कर में बस पहले बिजली के पोल से टकराई, फिर पेड़ से जा भिड़ी।

भोपाल में आज से निकलेंगी तिरंगा यात्राएं

14 अगस्त को कोलार में सबसे बड़ी यात्रा ; स्कूल-कॉलेजों में हुए कार्यक्रम

भोपाल (नप्र)। भोपाल में 'हर घर तिरंगा, हर घर स्वच्छता, स्वतंत्रता का उत्सव, स्वच्छता के संग' अभियान चल रहा है। शुक्रवार को स्कूलों में देशभक्ति से जुड़े कार्यक्रम होंगे। वहीं, शनिवार से तिरंगा रैलियां निकलेंगी। सबसे बड़ी यात्रा कोलार से निकलेगी। हुजूर विधायक रामेश्वर शर्मा की कर्मश्री संस्था यह आयोजन कर रही है। जिसमें 40 हजार से ज्यादा छोटे-बड़े वाहन शामिल होंगे।

अभियान को लेकर कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह बैठक भी कर चुके हैं। उन्होंने बताया, यह अभियान तीन चरणों में चल रहा है। प्रथम चरण 8 अगस्त तक जिले में देशभक्ति के वातावरण एवं तिरंगे पर केंद्रित सार्वजनिक कार्यक्रम, प्रदर्शनी, रंगोली, तिरंगा सजावट एवं प्रकाश की व्यवस्था की जा रही है। इस काम को जिला पंचायत सीईओ, डीईओ और नगर निगम अफसर कर रहे हैं। द्वितीय चरण 9 से 12 अगस्त तक जिले में तिरंगा रैली एवं मानव श्रृंखला का आयोजन किया जाएगा।

तीसरे चरण में सेल्फी अपलोड कर सकते हैं

तृतीय चरण 13 से 15 अगस्त तक आयोजित होगा। जिसमें घर एवं वाहनों पर तिरंगे फहराना, तिरंगा के साथ सेल्फी अपलोड करने एवं तिरंगे की दृश्यता से संबंधित कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। कलेक्टर ने संबंधित अधिकारियों को अभियान को सफल बनाने को कहा है।

जिला पुरातत्व, पर्यटन एवं सांस्कृतिक परिषद कर रहा कार्यक्रम

अभियान के चलते जिला पुरातत्व, पर्यटन और सांस्कृतिक परिषद जिले में कार्यक्रम कर रहा है। स्कूल और कॉलेजों में तिरंगा एक्टिविटी की जा रही है। परिषद के संयुक्त सचिव संदीप कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि जन-जन को आजादी के पर्व से जोड़ने के लिए यह विशेष अभियान चलाया जा रहा है। स्कूलों में कई कार्यक्रम कर चुके हैं। रक्षाबंधन पर्व पर छात्राओं ने राखियों को तिरंगा की आकृति भी दी।

राहुल का फिर दावा, वोट चुराकर प्रधानमंत्री बने मोदी

● कहा-25 सीट 35 हजार या कम अंतर से जीती बीजेपी

राहुल बोले-ईसी इलेक्ट्रानिक डेटा दे, तो साबित कर दूंगा

बेंगलुरु (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने शुक्रवार को कहा कि नरेंद्र मोदी तीसरी बार 25 सीट के मार्जिन से प्रधानमंत्री बने हैं। 25 सीट ऐसी हैं, जिन्हें भाजपा ने 35 हजार या कम वोट से जीतीं। अगर हमें इलेक्ट्रानिक डेटा मिल जाए तो हम साबित कर देंगे कि मोदी चोरी करके प्रधानमंत्री बने हैं। राहुल ने कहा- चुनाव आयोग को पिछले 10 साल की देश की सारी इलेक्ट्रानिक वोटर लिस्ट और वीडियोग्राफी देनी चाहिए। ये सब नहीं देंगे तो क्राइम है। भाजपा को चुनाव चोरी करने दे रहे हैं। पूरे देश को चुनाव आयोग से वोटर्स का डेटा मांगना चाहिए। राहुल गांधी ने कर्नाटक के बेंगलुरु में फ्रीडम पार्क में आयोजित कांग्रेस की वोट अधिकार रैली में ये बात कही। उनके साथ कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे भी रैली में शामिल हुए। बेंगलुरु पहुंचने से पहले राहुल ने एक्स पोस्ट में भी आरोप लगाया था कि कर्नाटक के महादेवपुरा विधानसभा क्षेत्र में 1,00,250 फर्जी वोट बनाए गए, जिससे भाजपा को फायदा हुआ। भाजपा-

लिखा- वोट चोरी केवल चुनावी घोटाला नहीं, बल्कि संविधान और लोकतंत्र के साथ बड़ा विश्वासघात है। देश के गुनहगार सुन लें, वक्त बदलेगा, सजा जरूर मिलेगी। राहुल ने गुरुवार को ईसी की मिलीभगत से यह धांधली हुई, जिसने पीएम मोदी को तीसरी बार सत्ता में पहुंचाया। कर्नाटक के महादेवपुरा में 6.50 लाख वोट हैं। उसमें से 1 लाख 250 वोट चोरी किए गए।

हाईकोर्ट जज को क्रिमिनल केस से हटाने का फैसला वापस

प्रयागराज (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट और इलाहाबाद हाईकोर्ट के बीच बन रही टकराव की स्थिति टल गई है। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को सीजेआई बीआर गवई के अनुरोध के बाद अपनी उस टिप्पणी को हटा दिया, जिसमें उसने इलाहाबाद हाईकोर्ट के जज प्रशांत कुमार की आलोचना की थी। सुप्रीम

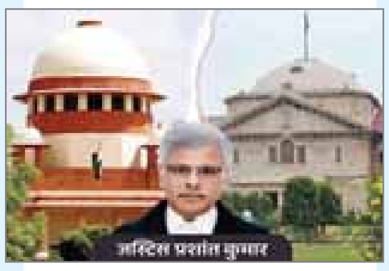

कोर्ट ने यह भी कहा था कि रिटायरमेंट तक जज प्रशांत कुमार को क्रिमिनल मामले न दिए जाएं। इसके विरोध में गुरुवार को इलाहाबाद हाईकोर्ट के 13 जजों ने सुप्रीम कोर्ट के आदेश के खिलाफ फुल कोर्ट मीटिंग बुलाने की मांग की थी। यह मामला एक सिविल विवाद के मामले में आपराधिक कार्यवाही की अनुमति देने से जुड़ा था।

जो भारत में नहीं जन्मा, वोट नहीं डालेगा

● शाह बोले-बांग्लादेश से आकर बिहार में नौकरियां खा जाते हैं, लालू-कांग्रेस उन्हें बचाना चाहते हैं

सीतामढ़ी (एजेंसी)। गृहमंत्री अमित शाह और नीतिश कुमार ने शुक्रवार को सीतामढ़ी में माता जानकी मंदिर का भूमिपूजन किया। इस दौरान डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी भी उनके साथ मौजूद रहे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए नीतिश कुमार ने पुरानी सरकार को घेरा। अमित शाह ने एसआईआर से लेकर ऑपरेशन सिंदूर पर अपनी बात रखी। उन्होंने ये भी बताया कि मोदी जी बिहार का दौरा कर रहे हैं। मैं संगठन की मीटिंग कर रहा हूं। बिहार में स्पष्ट बहुमत से एनडीए की सरकार बन रही है। अमित शाह ने एसआईआर पर लालू-राहुल को घेरते हुए कहा कि जो भारत में जन्मा नहीं, उसे वोट देने का अधिकार नहीं। घुसपैठिए इन लोगों के वोट बैंक हैं। इसलिए इनको (महागठबंधन) परेशानी है। बिहार में चुनाव होने वाला है। मेरे आने से पहले पूरे अखबार भरे पढ़े हैं कि एसआईआर होना चाहिए या नहीं। जनता बताए कि घुसपैठिए को वोटर लिस्ट से निकालना चाहिए या नहीं। लालू बताएं कि किसको बचाना चाहते हो। बांग्लादेश से आकर बिहार के युवाओं की नौकरी खा जाते हैं, लालू- कांग्रेस उनको बचाना चाहती है। जो भारत में जन्मा नहीं है उसे वोट देने का अधिकार भी नहीं है। तेजस्वी यादव मुझसे पूछते हैं कि एनडीए सरकार ने मिथिलांचल के लिए क्या किया। मैं बनिया का बेटा हूं, पाई-पाई का हिसाब रखता हूं। तेजस्वी बताएं उनके माता-पिता के राज में गुंडई और अपहरण के अलावा क्या हुआ। मैं लालू को चैलेंज देता हूं। आएं और पुनौराधाम में ही मिथिलांचल के लिए किए कामों को गिना दें। ऑपरेशन सिंदूर का जिक्र करते हुए शाह ने कहा- कांग्रेस की सरकार में आतंकी बम फेंककर भाग जाते थे। कोई पूछने वाला नहीं था। हमने पहलगाम हमले का बदला लिया। पाकिस्तान को घर में घुसकर मारा। ये लालू एंड पार्टी इस पर सवाल उठाती है। लालू एंड कंपनी को मालूम नहीं है, ये नरेंद्र मोदी की सरकार है, ये एनडीए की सरकार है।

गृहमंत्री अमित शाह ने रखी मंदिर की पहली ईंट

मूसलाधार बारिश के बीच गृहमंत्री अमित शाह ने मंदिर की पहली ईंट रखी। मंदिर को नेपाल के फूलों से सजाया गया है। भूमिपूजन के लिए 21 तीर्थों की मिट्टी, 11 नदियों का जल मंगवाया गया था। अयोध्या के हनुमान गढ़ी से ईंट भी पहुंची थी। 50 एकड़ में 882 करोड़ की लागत से मां जानकी के भव्य मंदिर का निर्माण किया जाएगा। पूरे मंदिर का निर्माण खास किस्म के सैंड स्टोन (बलुआ पत्थर) से होगा। ये पत्थर राजस्थान से मंगवाए जा रहे हैं। मंदिर की ऊंचाई 156 फीट होगी, जो अयोध्या के राम मंदिर से 5 फीट कम है।

मैं अपना सरकारी आवास समय पर खाली कर दूंगा

● सीजेआई गवई ने कहा-सूटेबल घर मिलना मुश्किल पर मैं नियमों से बंधा

नई दिल्ली (एजेंसी)। चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया बीआर गवई ने गुरुवार को कहा- नवंबर में रिटायरमेंट से पहले उपयुक्त (सूटेबल) घर मिलना मुश्किल है, लेकिन मैं नियमों के तहत तय समयसीमा में अपना सरकारी आवास खाली कर दूंगा। सीजेआई गवई ने ये बात जस्टिस सुधांशु धूलिया के विदाई कार्यक्रम में कही। सीजेआई गवई ने कहा, मैं जस्टिस धूलिया को सुप्रीम कोर्ट में आने के बाद से जानता हूं। वे बहुत ही गर्मजोश और न्यायपालिका को समर्पित व्यक्ति हैं। उनका योगदान हमेशा याद रखा जाएगा। धूलिया उन जजों में से एक होंगे जो रिटायरमेंट के बाद अपना सरकारी आवास तुरंत खाली कर देंगे। चीफ जस्टिस गवई ने ये बातें पूर्व सीजेआई चंद्रचूड़ के सरकारी आवास खाली करने के 7 दिन बाद कही हैं।

सुप्रीम कोर्ट की बांके बिहारी ट्रस्ट पर अस्थाई रोक

● यूपी सरकार ने मंदिर देखभाल के लिए बनाया था, केस हाईकोर्ट ट्रांसफर किया

मथुरा (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने बांके बिहारी ट्रस्ट पर अस्थायी रोक लगा दी। शुक्रवार को कोर्ट ने कहा- बांके बिहारी मंदिर न्यास अध्यादेश, 2025 के तहत समिति के संचालन को सस्पेंड किया जा रहा है। कोर्ट ने अध्यादेश की संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली याचिका को हाईकोर्ट ट्रांसफर किया है। दरअसल, 15 मई को सुप्रीम कोर्ट ने यूपी सरकार को मंदिर के धन का उपयोग कॉरिडोर विकास के लिए और मंदिर के आसपास की 5 एकड़ भूमि अधिग्रहण करने की अनुमति दी। शर्त यह थी कि अधिग्रहित भूमि ठाकुरजी के नाम पर पंजीकृत होगी। इसके बाद 26 मई को यूपी सरकार ने अध्यादेश- 2025 जारी किया। इसमें मंदिर की देखभाल के लिए ट्रस्ट (न्यास) बनाने की व्यवस्था की गई। इसमें मंदिर का प्रबंधन और श्रद्धालुओं की

सुविधाओं की जिम्मेदारी श्री बांके बिहारी जी मंदिर न्यास द्वारा संभाली जानी थी। इसमें 11 सदस्य मनोनीत होने थे, जबकि 7 सदस्य पदेन हो सकते हैं।

धराली त्रासदी

हाईटेक मशीनें पहुंचने में लगेंगे अभी और 4 दिन

● 80 एकड़ से मलबा हटाने में 3 जेसीबी लगीं, 100-150 लोगों के दबे होने की आशंका

देहरादून (एजेंसी)। उत्तरकाशी के धराली गांव में आई आपदा का चौथा दिन था। अभी भी 100 से 150 लोग लापता हैं, वे मलबे में दबे हो सकते हैं। पूरी तरह से रेस्क्यू शुरू होने में 4 दिन का समय और लग सकते हैं। धराली के 80 एकड़ में 20 से 50 फीट तक मलबा फैला है। इसे हटाने के लिए सिर्फ 3 जेसीबी मशीनें लगी हैं। मलबे के नीचे दबे लोगों की तलाश के लिए हाईटेक थर्मल सेंसिंग उपकरण और बड़ी मशीनें चाहिए, लेकिन ये सभी 60 किमी दूर भटवाड़ी में रास्ता न खुलने की वजह से 2 दिन से अटका हुआ है। उत्तरकाशी से गंगोत्री तक एक ही सड़क है, जो धराली से गुजरती है। हर्षिल से धराली की 3 किमी की सड़क 4 जगह पर 100 से 150 मीटर तक खत्म हो चुकी है। भटवाड़ी से हर्षिल तक तीन जगह लैंडस्लाइड और एक पुल टूटा है। ऐसे में धराली तक सड़क खुलने में 3-4 दिन और लग सकते हैं। उत्तरकाशी जिले के धराली में 5 अगस्त को दोपहर 1.45 बजे बादल फट गया था। खीर गंगा नदी में बाढ़ आ गई। तेज रफ्तार पानी के साथ आए मलबे ने 34 सेकेंड में धराली गांव को जमींदोज कर दिया था। अब तक 5 मौतों की पुष्टि हो चुकी है। 70 लोगों का रेस्क्यू किया गया है। इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन ने एक बयान जारी करते हुए कहा कि सैटेलाइट से हादसे वाली जगह की पहले और बाद की तस्वीर क्लिक की गई।

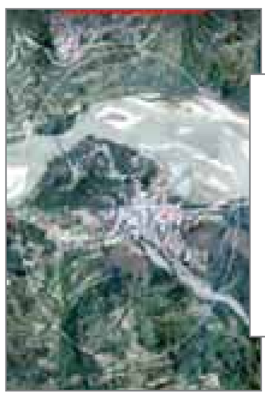

रक्षाबंधन भाई-बहन के प्रेम, विश्वास और संरक्षण का अद्भुत बंधन : भूरिया

लाड़ली बहनों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, सहायिकाओं और प्रदेशवासियों को दी शुभकामनाएं

भोपाल (नप्र)। महिला एवं बाल विकास मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया ने रक्षाबंधन पर्व पर सभी लाड़ली बहनों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, सहायिकाओं और समस्त प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन भाई-बहन के पवित्र प्रेम, विश्वास और संरक्षण का अद्भुत प्रतीक है, जो रिश्तों में अटूट विश्वास और स्नेह का संचार करता है।

सुश्री भूरिया ने कहा कि रक्षाबंधन का यह अवसर महिलाओं के सम्मान और सुरक्षा के संकल्प को पुनः दृढ़ करने का समय है। हमें महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक बनाने और बच्चों के स्वस्थ व सशक्त भविष्य के निर्माण के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए। मंत्री सुश्री भूरिया ने प्रदेशवासियों का आह्वान किया कि इस दिन हम सभी अपनी बहनों, माताओं और बेटियों की सुरक्षा, सम्मान और खुशहाली के लिए हर संभव प्रयास करने का प्रण लें। उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन न केवल भाई-बहन के रिश्ते को मजबूत बनाता है, बल्कि हमें एक सुरक्षित, सशक्त और संस्कारित समाज के निर्माण के लिए एकजुट होने की प्रेरणा देता है। उन्होंने कहा कि प्रेम और सौहार्द के इस पर्व पर हम सभी मिलकर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में महिला सशक्तिकरण और विकसित मध्यप्रदेश के लक्ष्य को साकार करने में अपना योगदान दें।

बहन-बेटियों को भारतीय संस्कृति से जुड़े संस्कार दें : विजयवर्गीय

इंदौर में हुआ रक्षाबंधन पर्व का आयोजन

भोपाल (नप्र)। नगरीय प्रशासन एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा है कि बहन-बेटियों को भारतीय संस्कृति से जुड़े संस्कार दें। ऐसा करके हम समाज में आदर्श परिवार के उदाहरण को प्रस्तुत कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि समाज में कई असामाजिक तत्व बेटियों को गलत रास्ते पर ले जाने के प्रयास कर रहे हैं। हम सबको मिलकर इससे सावधान रहने की जरूरत है। मंत्री श्री विजयवर्गीय गुरूवार को इंदौर में रक्षाबंधन कार्यक्रम को

संबोधित कर रहे थे। इस मौके पर महिलाओं ने मंत्री श्री विजयवर्गीय को राखी बांधी। महिलाओं ने शौर्य और पराक्रम की प्रतीक राखी सीमाओं पर तैनात सैनिकों को भी भेजी।

जनता ही हमारा परिवार

मंत्री श्री विजयवर्गीय ने कहा कि मेरा विधानसभा क्षेत्र एक परिवार के समान है। हम सब एक-दूसरे के सुख-दुख में शामिल होते हैं। साथ ही सामाजिक सद्भाव के माहौल में सभी त्यौहारों को मनाते हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिये 'लाड़ली बहना योजना' चलाई है। उन्होंने समाज की महिलाओं से आहवान किया कि वे कुछ समय निकालकर अपने हुनर के साथ आर्थिक गतिविधियों से जुड़ें। इससे मध्यप्रदेश आर्थिक रूप से और सशक्त हो सकेगा। कार्यक्रम में पूर्व विधायक श्री आकाश विजयवर्गीय, श्री सुदर्शन गुप्ता और स्थानीय जन-प्रतिनिधि भी मौजूद थे।

राज्य मुक्त स्कूल शिक्षा बोर्ड का अतिरिक्त प्रभार

भोपाल (नप्र)। स्कूल शिक्षा विभाग ने आदेश जारी कर अपर संचालक श्री रवीन्द्र कुमार सिंह को अपने वर्तमान दायित्व के साथ संचालक राज्य मुक्त स्कूल शिक्षा बोर्ड और निदेशक महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान का प्रभार सौंपा है। श्री सिंह वर्तमान में सांदिपनी विद्यालयों की प्रशासनिक व्यवस्थाओं का भी कार्य देख रहे हैं।

जबलपुर में सेना के रिटायर्ड जवान ने 45 लाख ऐंठे

एक दर्जन युवाओं को नौकरी के नाम पर ठगा; मिलिट्री इंटेलिजेंस ने पुलिस को सौंपा

जबलपुर (नप्र)। मिलिट्री इंटेलिजेंस ने एक ऐसे व्यक्ति को पकड़ा है, जिसने सेना में नौकरी लगवाने के नाम पर एक दर्जन से अधिक लोगों से लाखों रुपए ऐंठ लिए। सेना ने आरोपी राजेश कुमार राजभर को गुरुवार-शुक्रवार की दरमियानी रात रांझी पुलिस के हवाले किया है। आरोपी मिलिट्री अस्पताल से सेवानिवृत्त हुआ है। उसके बाद से ही वह कई युवाओं को सेना में नौकरी लगवाने का झांसा देते हुए 45 लाख रुपए ऐंठ चुका है। बता दे कि मिलिट्री इंटेलिजेंस ने यह कार्रवाई शिकायत के आधार पर की है।

देर रात आरोपी के घर पर छापा मारा– दरअसल, कुछ दिनों से जबलपुर में रहने वाले लोग लगातार मिलिट्री ऑफिस में दस्तावेजों के साथ नौकरी के लिए चक्कर काट रहे थे। अधिकारियों ने कागजातों की जांच की तो पता चला कि यह फर्जी है। इस फर्जीवाड़े में सेना से रिटायर्ड राजेश कुमार का नाम सामने आया। मिलिट्री ने देर रात मढ़ई स्थित राजेश के घर पर छापा मारा और उसे पकड़कर पुलिस के हवाले किया। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज कर पूछताछ शुरू कर दी। पुलिस आरोपी का बैंक अकाउंट एवं कॉल डिटेल्स की जांच कर रही है।

9 साल पहले हुआ रिटायर – शुरूआती जांच में पुलिस को पता चला है कि राजेश कुमार ने कई युवक युक्तियां के साथ धोखाधड़ी की है। कुछ लोगों से उसने नगद राशि ली थी। तो कुछ लोगों ने उसे ऑनलाइन रुपए ट्रांसफर करवाए थे। आरोपी 2016 में सेना से सेवानिवृत्त हुआ है, उससे पहले से 4 वर्ष तक मिलिट्री अस्पताल में पदस्थ था। जिसके कारण उसकी वहां अधिकारियों एवं कर्मचारियों से पहचान थी। सेवानिवृत्ति के बाद उसने कुछ युवकों को सेवा में नौकरी लगवाने का झांसा दिया।

उसने बताया कि उसकी बड़े अधिकारियों से अच्छी पहचान है, उनका सिर्फ शारीरिक चिकित्सकीय परीक्षण होगा। जिसमें वह जुगाड़ से पास कर देगा। उसके बाद अधिकारियो से बोलकर उनकी नियुक्ति करवा देगा।

बड़ी संख्या में मुख्यमंत्री निवास पहुंची राखियां

बहनों के हर सुख-दुःख में साथ है राज्य सरकार: सीएम

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को रक्षाबंधन के पावन पर्व पर प्रदेश की बहनों ने बड़ी संख्या में डाक से राखियां और स्नेहिल पत्र भेजे। लगभग पांच हजार पत्रों व राखियों में से प्रतीक स्वरूप राखियां बहनों ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव को तिलक कर उनकी कलाई पर बांधी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बहनों को नेग प्रदान कर उनके सुखद-स्वस्थ जीवन की कामना की। इस अवसर पर राजस्व मंत्री श्री करण सिंह वर्मा, लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री श्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल उपस्थित थे। यह आत्मीय आयोजन मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में हुआ। इस अवसर पर प्राप्त पत्रों में बहनों ने लाड़ली बहना योजना सहित महिला सशक्तिकरण और उनके कल्याण के लिए संचालित योजनाओं के लिए मुख्यमंत्री डॉ. यादव का आभार माना है। पत्रों में बहनों ने अपने स्नेहिल भाव को अभिव्यक्त किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बहनों को दिए संदेश में कहा कि राज्य सरकार परिवार की तरह बहनों के हर सुख-दुख में उनके साथ है। प्रदेश की बहनों को प्रगति के अवसर उपलब्ध कराने के लिए विभिन्न योजनाएं संचालित की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि हमारे पर्व और त्यौहार संस्कृति और संस्कार का आधार हैं, रक्षाबंधन के पावन पर्व पर बहनों की ओर से आए आत्मीयता से परिपूर्ण पत्र प्राप्त कर मैं अभिभूत हूं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राखियां भेजने के लिए बहनों का आभार माना।

रक्षाबंधन पर परस्पर आत्मीयता और एकजुटता बढ़ाने का संदेश दें : मुख्यमंत्री

राखी के पवित्र धागे जीवनभर साथ निभाने का संकल्प दिलाते हैं

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रक्षाबंधन के पावन पर्व पर सभी धर्मावलंबी बहनों को शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने कहा सभी त्यौहारों में भाई-बहन के त्यौहार रक्षाबंधन का विशेष महत्व है, जो गरीब-अमीर, ऊंच-नीच और धर्मों के बंधन से परे केवल स्नेह की भाषा जानता है। राखी के त्यौहार पर स्नेह के पवित्र धागे जीवनभर साथ निभाने का संकल्प दिलाते हैं।

बहनों के प्रति अत्याचार का प्रतिकार था ऑपरेशन सिंदूर– मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बहनों के सुहाग के साथ आतंकवादियों द्वारा किए गए अत्याचार का प्रतिकार यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से किया। सौभाग्य का विषय है कि सम्पूर्ण विश्व इसका साक्षी बना। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रक्षाबंधन के पावन पर्व की सभी को बधाई देते हुए परस्पर आत्मीयता और एकजुटता बढ़ाने का आव्हान किया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की पहल को मिला राष्ट्रीय पुरस्कार

मध्यप्रदेश को संपदा 2.0 सॉफ्टवेयर के लिए मिला 'राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस स्वर्ण पुरस्कार'

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की पहल पर 10 अक्टूबर 2024 को राज्य स्तर पर शुरू किए गए संपदा 2.0 सॉफ्टवेयर ने मध्यप्रदेश को राष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित किया है। इस अभिनव पहल को वर्ष 2025 का 'राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस पुरस्कार' में 'स्वर्ण' श्रेणी का सम्मान प्राप्त हुआ है। भारत सरकार के प्रशासनिक सुधार एवं लोक शिकायत विभाग द्वारा यह पुरस्कार 'Government Process Re-engineering by use of technology for Digital Transformation' श्रेणी में प्रदान किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने इस उपलब्धि पर प्रदेशवासियों, वाणिज्यिक कर विभाग, महानिरीक्षक पंजीयन एवं अधीक्षक मुद्रांक तथा परियोजना से जुड़े सभी अधिकारियों-कर्मचारियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि संपदा 2.0 ने मध्यप्रदेश को डिजिटल भूमि प्रबंधन के क्षेत्र में देश में अग्रणी बनाया है। यह पहल न केवल पारदर्शिता और दक्षता बढ़ाएगी, बल्कि लोगों को बिना कार्यालय आए, सुरक्षित और सरल तरीके से पंजीयन सुविधा उपलब्ध कराएगी। यह हमारे डिजिटल और सुशासन के संकल्प का महत्वपूर्ण कदम है।

भूमि प्रबंधन में विभाग की एक ऐतिहासिक पहल: उप मुख्यमंत्री देवड़ा

उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा ने इस उपलब्धि को भूमि प्रबंधन में विभाग की एक ऐतिहासिक पहल बताया और प्रदेशवासियों को बधाई दी। प्रमुख सचिव वाणिज्यिक कर विभाग एवं महानिरीक्षक पंजीयन एवं अधीक्षक मुद्रांक ने भी शुभकामनाएं प्रेषित कीं।

मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य है, जिसने दस्तावेजों का पूर्णतः-पेपरलेस ई-पंजीयन प्रारंभ किया है। भारतीय स्टाम्प अधिनियम के अंतर्गत लगभग 140 प्रकार के दस्तावेजों में से 75 दस्तावेजों का वीडियो के-वाई-सी के माध्यम से फेसलेस पंजीयन संभव हुआ है, जिसमें उप-पंजीयक कार्यालय आने की आवश्यकता नहीं रहती।

संस्कृति बचाओ मंच की अपील, सिर्फ सनातनी भाई को बांधें राखी

न्यू मार्केट में कहा- आपका अब्दुल भी वैसा ही निकलेगा जैसा औरों का

भोपाल (नप्र)। रक्षाबंधन पर्व से पहले राजधानी के न्यू मार्केट इलाके में संस्कृति बचाओ मंच ने शुक्रवार को अभियान चलाकर राखी की दुकानों पर मौजूद महिलाओं और युवतियों को 'सनातनी संस्कृति' के प्रति जागरूक किया। मंच के पदाधिकारियों ने अपील की कि राखी केवल 'सनातन धर्म के अनुयायी भाइयों' को ही बांधें, ताकि किसी प्रकार की आपराधिक या जिहादी घटना की आशंका से बचा जा सके।

अभियान का नेतृत्व संस्कृति बचाओ मंच के अध्यक्ष चंद्रशेखर तिवारी ने किया। उन्होंने कहा, दिल्ली की एक घटना में एक युवती ने मुस्लिम युवक को राखी बांधी, जिसे उसने भाई माना, लेकिन बाद में उसी युवक ने उसकी हत्या कर दी। ऐसी घटनाएं यह सोचने पर मजबूर करती हैं कि हमें रक्षाबंधन जैसे पवित्र पर्व पर भी सतर्क रहने की आवश्यकता है।

उन्होंने दुकानदारों से कहा कि महिलाएं और बहनें राखी वहीं से खरीदें जहां सनातन धर्म के प्रतीक मौजूद हों, जैसे दुकान पर भगवान की फोटो लगी हो या दुकानदार ने तिलक लगाया हो। चंद्रशेखर तिवारी ने कहा आपका अब्दुल भी वैसा ही निकलेगा जैसा दूसरों का निकला है, इसलिए केवल सनातनी भाइयों की कलाई पर ही रक्षा सूत्र बांधें। तिवारी ने महिलाओं को आगाह किया कि किसी मुस्लिम युवक को भाई बनाकर राखी बांधने से जान का खतरा हो सकता है। उन्होंने दिल्ली की उस घटना का उल्लेख किया जिसमें एक युवती ने मुस्लिम युवक को राखी बांधी थी और बाद में उसी युवक ने उसे छह मंजिला इमारत से नीचे फेंक कर हत्या कर दी थी।

'लव जिहाद' को लेकर दी चेतावनी– संस्कृति बचाओ मंच के अध्यक्ष चंद्रशेखर तिवारी ने कहा,लव जिहाद की घटनाएं देशभर में तेजी से बढ़ रही हैं, जहां कुछ लोग हिंदू नाम रखकर लड़कियों को फंसा रहे हैं और फिर उनके साथ गंभीर अपराध कर रहे हैं। ऐसे में रक्षाबंधन के दिन किसी अब्दुल को भाई बना लेना आपके जीवन के लिए खतरा हो सकता है।

मंच की ओर से वितरित किए गए पैम्फलेट में भी महिलाओं को सतर्क रहने की अपील की गई और कहा गया कि सनातनी भाइयों की कलाई पर ही राखी बांधने से पवित्रता भी बनी रहेगी और सुरक्षा भी सुनिश्चित होगी।

लोक निर्माण से लोक कल्याण

पर्यावरण-संरक्षण और सतत् विकास को बना रहे हैं विभागीय कार्यों का अभिन्न हिस्सा : मंत्री सिंह

भोपाल(नप्र)। लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह ने कहा है कि विभाग अपने ध्येय वाक्य लोक निर्माण से लोक कल्याण को केवल सड़कों, पुलों और भवनों के निर्माण तक सीमित न रखते हुए अब पर्यावरण-संरक्षण और सतत विकास को भी विभागीय कार्यों का अभिन्न हिस्सा बना रहा है। इसी सोच को साकार करने और अभियंताओं में पर्यावरणीय जागरूकता को और गहरा करने के उद्देश्य से 11 अगस्त को रवींद्र भवन भोपाल में पर्यावरण से समन्वय विषय पर एक दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। यह ऐतिहासिक आयोजन प्रदेश के लगभग 1500 अभियंताओं को एक ही मंच पर एकत्र करेगा, जिसमें वे न केवल पर्यावरण-अनुकूल निर्माण तकनीकों का अध्ययन करेंगे बल्कि टिकाऊ विकास के नए आयाम भी सीखेंगे।

मंत्री श्री सिंह ने बताया कि कार्यशाला में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, पर्यावरणविद् श्री गोपाल आर्य, भास्करायचार्य संस्थान के महानिदेशक श्री टी.पी. सिंह शामिल होंगे और अभियंताओं को प्रेरक संदेश देंगे। कार्यक्रम की रूपरेखा में उद्घाटन-सत्र, मुख्य अतिथियों के संबोधन, तकनीकी-सत्र और विशेष प्रशिक्षण-सत्र शामिल हैं। इस अवसर पर पर्यावरण-अनुकूल तकनीकों की प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी, जिसमें निर्माण क्षेत्र में उपयोग होने वाली नवीनतम और टिकाऊ तकनीकों का प्रदर्शन किया जाएगा।

मंत्री श्री राकेश सिंह ने बताया कि वास्तविक लोक कल्याण तभी संभव है जब हम आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ, सुरक्षित और स्वस्थ पर्यावरण छोड़कर जाएं। उन्होंने कहा कि अभियंताओं की जिम्मेदारी केवल निर्माण कार्य तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके हर प्रोजेक्ट में पर्यावरणीय दृष्टिकोण को सम्मिलित करना भी आवश्यक है। कार्यशाला में अभियंताओं को आधुनिक हरित निर्माण सामग्री, ऊर्जा दक्षता बढ़ाने वाली तकनीक, अपशिष्ट प्रबंधन और पर्यावरण संतुलन से जुड़ी पद्धतियों के बारे में विस्तार से प्रशिक्षण दिया जाएगा।

तकनीकी सत्र में भास्कराचार्य राष्ट्रीय अंतरिक्ष उपयोग एवं भू-सूचना विज्ञान संस्थान गांधीनगर, गुजरात के विशेषज्ञ पीएम गतिशक्ति योजना के अंतर्गत डिटेल्ड प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करने की विधि पर विशेष प्रस्तुतीकरण देंगे। साथ ही जीआईएस पोर्टल पर सड़कों एवं पुलों की भौगोलिक मैपिंग की प्रक्रिया और उसके लाभों पर भी अभियंताओं को व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा, जिससे वे आधुनिक तकनीक का अधिकतम उपयोग कर विभागीय परियोजनाओं की गुणवत्ता, पारदर्शिता और प्रभावशीलता को बढ़ा सकें।

मंत्री श्री सिंह ने कहा कि यह कार्यशाला न केवल अभियंताओं के तकनीकी एवं व्यावसायिक कौशल में वृद्धि करेगी, बल्कि पर्यावरण संरक्षण को विभागीय योजनाओं के केंद्र में लाने का भी एक ठोस प्रयास है।

इससे प्रदेश में हरित, टिकाऊ और जिम्मेदार बुनियादी ढांचे के निर्माण को नई दिशा मिलेगी और लोक निर्माण से लोक कल्याण की परिकल्पना साकार रूप ले सकेगी।

प्रसून जोशी और संजय लीला भंसाली को किशोर कुमार सम्मान

सोनू निगम को लता मंगेशकर सम्मान, मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग ने 8 राष्ट्रीय सम्मानों की घोषणा की

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग ने गुरुवार को वर्ष 2024 और 2025 के लिए देश के 8 प्रमुख राष्ट्रीय सम्मानों की घोषणा की। इसमें फिल्म, संगीत, तकनीक, हिंदी साहित्य और सामाजिक सेवा से जुड़ी विभूतियों और संस्थाओं को चयनित किया गया है। यह सम्मान राज्य की ओर से देश और विदेश में कला, भाषा और समाज के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्तित्वों को दिया जाता है।

इस बार प्रतिष्ठित राष्ट्रीय किशोर कुमार सम्मान वर्ष 2024 में गीत लेखन के लिए प्रख्यात गीतकार और सेंसर बोर्ड प्रमुख प्रसून जोशी और वर्ष 2025 में निर्देशन के लिए चर्चित फिल्म निर्देशक संजय लीला भंसाली को दिया जाएगा। वहीं राष्ट्रीय लता मंगेशकर सम्मान वर्ष 2024 लोकप्रिय संगीतकार जोड़ी शंकर-एहसान-लॉय और वर्ष 2025 का सम्मान सुरों के सम्राट सोनू निगम को मिलेगा।

यह रहेंगे आयोजन के प्रमुख स्थल

*राष्ट्रीय लता मंगेशकर सम्मानः 28 सितंबर 2025, इंदौर
*राष्ट्रीय किशोर कुमार सम्मानः 13 अक्टूबर 2025, खंडवा
*राष्ट्रीय महात्मा गांधी सम्मानः 2 अक्टूबर 2025, भोपाल
*अन्य पांच सम्मान 14 सितंबर 2025 को हिंदी दिवस पर भोपाल में वितरित किए जाएंगे।

2024 के लिए घोषित सम्मान

*राष्ट्रीय किशोर कुमार सम्मान (गीत लेखन): प्रसून जोशी (दिल्ली)
*राष्ट्रीय लता मंगेशकर सम्मान (संगीत निर्देशन): शंकर-एहसान-लॉय (मुंबई)
*राष्ट्रीय महात्मा गांधी सम्मानःआनंदधाम (भोपाल)

*राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी सम्मानः प्रशांत पोळ (जबलपुर)
*राष्ट्रीय निर्मल वर्मा सम्मानः रीता कौशल (ऑस्ट्रेलिया)
*राष्ट्रीय फादर कामिल बुल्के सम्मानः डॉ. इंदिरा गाजिएवा (रूस)
*राष्ट्रीय गुणाकर मुले सम्मानः डॉ. राधेश्याम नापित (शहडोल)
*राष्ट्रीय हिंदी सेवा सम्मानः डॉ. केसी अजय कुमार (तिरुवनंतपुरम)
*राष्ट्रीय लता मंगेशकर सम्मान (संगीत निर्देशन): शंकर-एहसान-लॉय को दिया जाएगा।
*राष्ट्रीय लता मंगेशकर सम्मान (संगीत निर्देशन): शंकर-एहसान-लॉय को दिया जाएगा।

2025 के लिए घोषित सम्मान

*राष्ट्रीय किशोर कुमार सम्मान (निर्देशन): संजय लीला भंसाली (मुंबई)
*राष्ट्रीय लता मंगेशकर सम्मान (पार्श्व गायन): सोनू निगम (मुंबई)
*राष्ट्रीय महात्मा गांधी सम्मानः पुनरुत्थान समरसता गुरुकुलम (पुणे)
*राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी सम्मानः लोकेन्द्र सिंह राजपूत (भोपाल)
*राष्ट्रीय निर्मल वर्मा सम्मानः डॉ. वंदना मुकेश (इंग्लैंड)

भोपाल में 600 पेशियां आगे बढ़ाई

तीसरे दिन भी काम पर नहीं तहसीलदार–नायब तहसीलदार, आम लोगों के काम पर असर

भोपाल (नप्र)। न्यायिक और गैर न्यायिक विभाजन से नाराज राजस्व अधिकारी लगातार तीसरे दिन शुक्रवार को भी काम नहीं कर रहे हैं। इससे अकेले भोपाल में ही 600 से ज्यादा कोर्ट केस की पेशियां आगे बढ़ाई गई हैं। अगले 2 दिन सरकारी छुट्टी है। इस वजह से आम लोगों के काम पर ज्यादा असर पड़ेगा।

नई व्यवस्था को भोपाल के सभी तहसीलदार और नायब तहसीलदार 6 अगस्त से विरोध कर रहे हैं। गुरुवार को उन्होंने अपनी गाड़ियों की चॉबी कलेक्टोरेट में जमा कर दी थी। वे ऑफिसों में तो बैठ रहे, लेकिन काम नहीं कर रहे। इस वजह से कोर्ट केस की पेशियां आगे बढ़ाई जा रही हैं।

जनता से जुड़े 500 मामले आते हैं हर रोज– जानकारी के अनुसार, नामांतरण, सीमांकन, फौती नामांतरण, मूल निवासी, जाति प्रमाण पत्र, आय प्रमाण पत्र, ईडब्ल्यूएस सहित करीब 500 से अधिक मामले आते हैं। इसके अलावा हर दिन करीब तीन सौ प्रकरणों में तहसीलदार,नायब तहसीलदार सुनवाई करते हैं। इस वजह से दो दिन में ही 600 से ज्यादा केस की पेशियां आगे बढ़ा दी गई है। तीसरे दिन शुक्रवार को भी 300 पेशियां आगे बढ़ेगी। ऐसे में आंकड़ा 900 तक पहुंच सकता है।

फील्ड और ऑफिस के काम में विभाजित किए गए– भोपाल में बैरागढ़, कोलार, एमपी नगर, शहर वृत्त, बैरसिया और टीटी नगर तहसीलें हैं। इनके तहसीलदार और नायब तहसीलदारों को न्यायिक और गैर न्यायिक कार्य में विभाजित किया गया है। यानी, जो अधिकारी न्यायिक कार्य कर रहे हैं, वे फिल्ड में नहीं है। वहीं, फील्ड वाले अधिकारी न्यायिक कार्य नहीं कर रहे। इस व्यवस्था का वे भी विरोध कर रहे हैं।

मंत्री-अफसरों को सुना चुके समस्या– इस संबंध में मध्यप्रदेश राजस्व अधिकारी (कनिष्ठ प्रशासनिक सेवा) संघ राजस्व मंत्री वर्मा और सीनियर अधिकारियों के सामने अपनी बात रख चुका है। इस दौरान बताया गया था कि अगले 3 महीने के लिए 12 जिलों में ही पायलेट प्रोजेक्ट के तहत यह व्यवस्था लागू की जाएगी, लेकिन बाद में 9 और जिलों में यह व्यवस्था लागू कर दी गई।

इसके चलते संघ के सभी जिला अध्यक्ष, प्रभारी और प्रतिनिधियों की बैठक हुई। इसमें 6 अगस्त से विरोध करने का फिर से निर्णय लिया गया। संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष नवीनचंद कुंभकार ने बताया कि भोपाल, इंदौर, उज्जैन समेत प्रदेश के कई जिलों में राजस्व अधिकारी विरोध कर रहे हैं। भोपाल में भी असर देखने को मिल रहा है।

अभी हड़ताल पर नहीं जाएंगे– विभाजन को लेकर संघ की बैठक हो चुकी है। इसमें संवर्ग में विभाजन की इस योजना के पूर्ण रूप से वापस नहीं होने तक सभी राजस्व अधिकारी आपदा प्रबंधन कार्यों को छोड़कर समस्त कार्यों से विरत रहते हुए जिला मुख्यालयों पर उपस्थित रहने का निर्णय लिया गया। हालांकि, कोई भी सामूहिक अवकाश या हड़ताल पर नहीं है। सभी राजस्व अधिकारी जिला मुख्यालय पर ही उपस्थित हैं।

नर्सरी के बच्चों को 'क से काबा', 'म से मस्जिद' पढ़ाया

रायसेन में एबीवीपी का स्कूल में हंगामा; प्राचार्य ने कहा- म से मंदिर भी पढ़ा सकते हैं

रायसेन (नप्र)। रायसेन में एक निजी स्कूल में नर्सरी के बच्चों को 'क से काबा', 'म से मस्जिद', 'न से नमाज' और 'औ से औरत हिजाब में थी' जैसे शब्द पढ़ाए जा रहे थे। इसे लेकर शुक्रवार को परिजन और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के कार्यकर्ताओं ने स्कूल में हंगामा कर दिया।

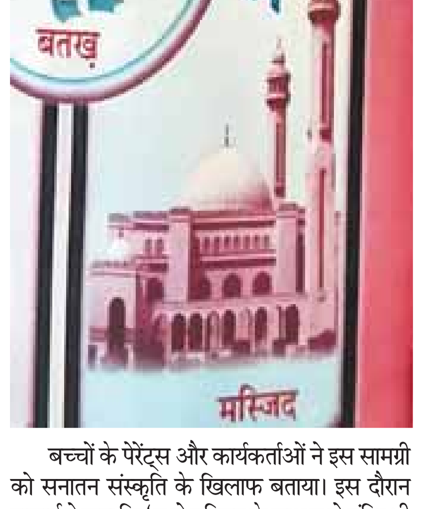

बच्चों के पेरेंट्स और कार्यकर्ताओं ने इस सामग्री को सनातन संस्कृति के खिलाफ बताया। इस दौरान प्राचार्य ने कहा कि 'म से मस्जिद के साथ म से मंदिर भी पढ़ाया जा सकता है'। इस पर कार्यकर्ता और भड़क गए। कार्यकर्ताओं ने स्कूल की मान्यता रद्द करने की मांग करते हुए जिला शिक्षा अधिकारी को फोन पर शिकायत दर्ज कराई।

हंगामे की सूचना पर थाना कोतवाली प्रभारी नरेंद्र गोयल मौके पर पहुंचे और स्थिति को संभाला। उन्होंने प्रदर्शन कर रहे कार्यकर्ताओं को थाने और जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय में आवेदन देकर औपचारिक शिकायत करने की सलाह दी।

परिजन ने किताबें देखी तब हुआ खुलासा

यह मामला तब सामने आया जब स्कूल की नर्सरी कक्षा में पढ़ने वाली एक छात्रा के चाचा ने उसकी किताबें देखी। उन्होंने 'औ से औरत हिजाब में थी' पढ़ने के बाद अन्य शब्दों पर ध्यान दिया। इसमें 'क से कबूतर' की जगह 'क से काबा', 'म से मछली' की जगह 'म से मस्जिद' और 'न से नल' की जगह 'न से नमाज' लिखा था। इस पर परिजनों ने आपत्ति जताई और एबीवीपी को जानकारी दी।

प्राचार्य ने कहा- भोपाल से मंगवाया किताबों का सेट

स्कूल की प्राचार्य ईए कुरैशी ने कहा कि उन्होंने किताब की सामग्री पहले नहीं जांची थी। यह 'पट्टी पहाड़ा' भोपाल से मंगवाया गया था। इसका उपयोग केवल एक ही छात्र के लिए किया गया था। प्राचार्य ने कहा कि उनका उद्देश्य किसी की भावना को ठेस पहुंचाना नहीं था। वे 30 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं।

डीईओ ने कहा- मान्यता रद्द करने पत्र लिखेंगे

जिला शिक्षा अधिकारी डीडी रजक का कहना है कि इस टाइप का कोई पट्टी पहाड़ा है तो उसे जब्त कर जांच कराई जाएगी। स्कूल की मान्यता रद्द करने के लिए जेडी को पत्र लिखेंगे।

एबीवीपी ने कहा- बच्चों को भ्रमित किया जा रहा

प्रदर्शन के दौरान विद्यार्थी परिषद के जिला संयोजक अश्विनी पटेल ने आरोप लगाया कि यह हिंदू संस्कृति और सनातन परंपरा के खिलाफ एक षड्यंत्र है। उन्होंने कहा कि छोटे बच्चों को इस तरह की सामग्री पढ़ाकर भ्रमित किया जा रहा है। हमने तो बचपन में 'क से कबूतर' और 'म से मछली' पढ़ा था। यह बदलाव अस्वीकार्य है।

इंदौर से कटनी जा रही युवती ट्रेन से लापता

उमरिया स्टेशन पर मिला बैग; सिविल जज की तैयारी कर रही थी

भोपाल (नप्र)। इंदौर से कटनी जाने के लिए निकली 29 साल की युवती अर्चना तिवारी रहस्यमय परिस्थितियों में लापता हो गई है। अर्चना 7 अगस्त की सुबह इंदौर से कटनी के लिए निकली थी। वह ट्रेन नंबर 18233 इंदौर-बिलासपुर नर्मदा एक्सप्रेस के बी-3 कोच में सीट नंबर 3 पर सफर कर रही थी।

बताया जा रहा है कि युवती इंदौर से रवाना हुई और भोपाल के रानी कमलापति स्टेशन तक पहुंची, लेकिन इसके बाद ट्रेन में दिखाई नहीं दी। उसका बैग उमरिया स्टेशन पर मिला, लेकिन वह खुद कहां गई। इसका अब तक पता नहीं चल सका है।

युवती के परिजन के अनुसार, अर्चना मंगल नगर, कटनी की निवासी है और वर्तमान में इंदौर में रहकर सिविल जज की परीक्षा की तैयारी कर रही थी। साथ ही वकालत भी कर रही थी। ट्रेन में सफर के दौरान परिवार वालों से आखिरी बार उसकी बात सुबह 10:15 बजे हुई थी। तब ट्रेन भोपाल के आसपास थी। इसके बाद से उसका मोबाइल फोन बंद है।

परिजनों ने जब कटनी स्टेशन पर उसका इंतजार किया और वह नहीं पहुंची, तो तत्काल तलाश शुरू की गई। परिजन ने उमरिया स्टेशन पर मौजूद रिश्तेदारों को सूचना दी। जब रिश्तेदारों ने ट्रेन का इंतजार किया तो उन्हें युवती का बैग उमरिया में मिला, लेकिन अर्चना नहीं मिली। ट्रेन के अन्य यात्रियों ने बताया कि वह इंदौर से भोपाल तक ट्रेन में देखी गई थी, लेकिन भोपाल के बाद ट्रेन में वह मौजूद नहीं थी।

युवती की तलाश के लिए भोपाल सहित ट्रेन के रूट पर पड़ताल- जीआरपी कटनी से सब इंस्पेक्टर अनिल मरावी ने बताया कि युवती इंदौर से कटनी के लिए रवाना हुई थी। परिजन का कहना है कि वह पढ़ी-लिखी और समझदार है। सिविल जज की तैयारी कर रही थी। ऐसे में अचानक ट्रेन से उतर जाना या गुम हो जाना संदिग्ध लगता है।

हमने मोबाइल लोकेशन ट्रेस करने की कोशिश की लेकिन उसका फोन स्विच ऑफ है। पुलिस को अभी तक कोई सीसीटीवी फुटेज नहीं मिला है। जिससे यह पता चल सके कि युवती ट्रेन से कब और कहां उतरी?

सब इंस्पेक्टर ने बताया कि उन्होंने परिजन से युवती की फोटो लेकर पुष्टि कर ली है और लापता रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। सीसीटीवी खंगाले जा रहे हैं। अर्चना तिवारी की तलाश के लिए भोपाल समेत ट्रेन के पूरे रूट पर जानकारी जुटाई जा रही है।

रक्षाबंधन पर बढ़ी रीवा जाने वाली ट्रेनों में वेटिंग

स्पेशल ट्रेन में जोड़े 4 कोच, 304 सीटें बढ़ाई

भोपाल (नप्र)। रक्षाबंधन पर्व नजदीक आते ही ट्रेनों में भोपाल से रीवा जाने वाले यात्रियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। पिछले कुछ दिनों से इस रूट की अधिकांश ट्रेनों में सीटें फुल हो चुकी थीं और लंबी प्रतीक्षा सूची बन गई थी। ऐसे में यात्रियों की परेशानी को देखते हुए पश्चिम मध्य रेलवे ने बड़ा फैसला लिया है।

रेल प्रशासन ने गाड़ी संख्या 01661 रानी कमलापति-रीवा स्पेशल एक्सप्रेस में 2 स्लीपर और 2 एसी थर्ड क्लास कोच बढ़ाने का निर्णय लिया है। इससे करीब 304 अतिरिक्त यात्रियों को कंफर्म सीट मिल सकेगी। रेलवे का कहना है कि यह कदम खासतौर पर त्योहारी भीड़ को देखते हुए उठाया गया है, ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग बिना परेशानी अपने गंतव्य तक पहुंच सकें।

शाम 7:35 बजे रवाना होगी ट्रेन- यह स्पेशल ट्रेन रानी कमलापति से शुक्रवार, 8 अगस्त को शाम 7:35 बजे रवाना होगी और विदिशा, बीना, सागर, दमोह, कटनी मुड़वारा, मैहर व सतना होते हुए दूसरे दिन सुबह 6:20 बजे रीवा पहुंचेगी। रेल प्रशासन ने अपील की है कि यात्री यात्रा से पूर्व गाड़ियों की समय-सारिणी और ठहराव की जानकारी के लिए 'रेल मदद 139' हेल्पलाइन या एनटीईएस ऐप का इस्तेमाल करें।

मंदसौर में शिक्षक ने छात्राओं को बेड टच किया

पांच बालिकाओं ने परिजन को बताई आरोपी की करतूत; डीईओ ने निलंबित किया

मंदसौर (नप्र)। मंदसौर के पिपलिया सोलंकी गांव के सरकारी स्कूल में एक शिक्षक पर छात्राओं के साथ अश्लील हरकत करने का आरोप है। परिजन के अनुसार, शिक्षक फूल मोहम्मद कादरी ने तीसरी से पांचवीं कक्षा की 5 छात्राओं के साथ लगातार अनुचित व्यवहार किया।

घटना की जानकारी गुरुवार को उस वक्त लगी जब डरी-सहमी छात्राएं घर पहुंचीं और परिजन को आपबीती सुनाई। मामला सामने आने के बाद जिला शिक्षा अधिकारी ने शिक्षक को निलंबित कर दिया है। पुलिस ने आरोपी फूल मोहम्मद कादरी को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया।

परिजन ने स्कूल पहुंचकर किया हंगामा- छात्राओं की बात सुनकर परिजन आक्रोशित हो गए और गुरुवार दोपहर बड़ी संख्या में ग्रामीणों के साथ स्कूल पहुंचकर हंगामा किया। ग्रामीणों ने आरोपी शिक्षक को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया।

परिजन का आरोप है कि शिक्षक 55 वर्षीय फूल मोहम्मद पिछले 15 दिनों से छात्राओं के साथ बेड टच जैसी अश्लील हरकतें कर रहा था। छात्राएं डर के कारण कुछ दिनों तक चुप रहीं, लेकिन गुरुवार को परिजन को पूरी घटना बताई।

यूपी का रहने वाला है आरोपी- थाना प्रभारी राजेंद्र पंवार ने बताया कि परिजन की शिकायत पर शिक्षक के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता और पॉक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है। छात्राओं के बयान दर्ज किए जा रहे हैं और आगे की जांच जारी है।

पुलिस ने बताया कि आरोपी फूल मोहम्मद कादरी मूल रूप से उत्तर प्रदेश का रहने वाला है। उसकी पत्नी का डेढ़ साल पहले निधन हो चुका है। उसकी तीन बेटियां हैं। पूछताछ में शिक्षक ने आरोपों को निराधार बताया है। हालांकि, पुलिस मामले की गंभीरता से जांच कर रही है।

स्कूल में एक ही शिक्षक था पदस्थ- इस स्कूल में एक ही शिक्षक फूल मोहम्मद था। मंदसौर जिला शिक्षा अधिकारी ने शिक्षक के खिलाफ एफआईआर दर्ज होने के बाद उसे तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। ग्रामीणों और परिजन ने मांग की है कि आरोपी को सख्त सजा दी जाए और विद्यालयों में निगरानी व्यवस्था मजबूत की जाए।

बच्चों को सांदीपनि स्कूल में शिफ्ट किया- मल्हारगढ़ बीआरसी शिशिर विजयवर्गीय ने बताया कि सोलंकी गांव के शासकीय प्राथमिक स्कूल में पढ़ने वाले 18 बच्चों को शुक्रवार को मल्हारगढ़ सांदीपनि विद्यालय में शिफ्ट किया गया है।

लोकेंद्र सिंह को राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान

भोपाल। मध्यप्रदेश के संस्कृति विभाग ने अपने राष्ट्रीय सम्मानों की घोषणा की है, जिसमें इस वर्ष का राष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी सम्मान लोकेन्द्र सिंह राजपूत को प्रदान किया जाएगा। संस्कृति विभाग यह सम्मान प्रतिवर्ष हिन्दी सॉफ्टवेयर सर्च इंजिन, वेब डिजाइनिंग, डिजीटल भाषा प्रयोगशाला, प्रोग्रामिंग, सोशल मीडिया, डिजीटल ऑडियो विजुअल एडीटिंग आदि में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया जाता है। उल्लेखनीय है कि लोकेन्द्र सिंह देश के जाने-माने ब्लॉगर हैं। सोशल मीडिया और डिजीटल ऑडियो-वीडियो प्रोडक्शन में उनकी सक्रियता है। उनकी डॉक्युमेंट्री फिल्में राष्ट्रीय पुरस्कारों से पुरस्कृत हैं। नागरिकों को सोशल मीडिया का प्रशिक्षण देने में भी उनकी सक्रियता रहती है। इससे पूर्व मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी भी 'फेसबुक/ब्लॉग/नेट' हेतु 'अखिल भारतीय नारद मुनि' पुरस्कार से अलंकृत कर चुकी है। वर्तमान में आप माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल में सहायक प्राध्यापक हैं।

विधायक नीना वर्मा ने विस में उठाया डूब प्रभावितों के पुनर्वास का मुददा

धरमपुरी (इब्राहिम रिजवी)। सरदार सरोवर परियोजना के बैकवाटर धरमपुरी सहित धार - बड़वानी जिले के डूब प्रभावितों को 2004 में ही आवासीय भूखंड आवंटन हो गये थे और उस वक्त भूखंड के साथ अधिकार पत्र दिए थे। 21 वर्ष बीतने के बाद भी डूब प्रभावितों को भूखंड की रजिस्ट्री व भूखंड अधिकार प्राप्तकर्ता की मृत्यु के बाद उनके वारिसों को भूखंड का नामांतरण कराने और पुनर्वास स्थल के विकास का मुद्दा धार विधायक श्रीमती नीना विक्रम वर्मा ने विधानसभा में उठाया। मुद्दे की गंभीरता को देखते हुए मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव व नर्मदा घाटी विकास राज्य मंत्री धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी ने सदन को आश्वस्त करते हुए धरमपुरी सहित धार -बड़वानी जिले के डूब प्रभावितों के लिए कहां कि प्रक्रिया चल रही है और जल्द ही इसके सुखद परिणाम देखने को मिलेंगे। उल्लेखनीय है कि सरदार सरोवर परियोजना के बैकवाटर से डूब प्रभावित धरमपुरी व धार और बड़वानी के डूब प्रभावितों को शासन द्वारा 2004 में भूखंड आवंटित किए कर अधिकार पत्र दिए थे। लेकिन 21 वर्षों के बाद भी प्रभावितों को न तो रजिस्ट्री के अधिकार मिले और न ही भूखंड प्राप्तकर्ता की मृत्यु होने पर वारिसों को भूखंडों का नामांतरण हो रहा है। प्लॉट की रजिस्ट्री न होने से मकान निर्माण के लिए डूब प्रभावितों को बैंक लोन नहीं मिलता। राज्य मंत्री धर्मेंद्र भाव सिंह लोधी ने श्रीमती नीना विक्रम वर्मा के प्रश्न के उत्तर में कहा कि शासन ने मालिकाना हक दिए जाने की कार्यवाही कर दी है। और जो डूब प्रभावितों की मृत्यु हो चुकी है और जो वारिस हैं और उन्होंने उचित प्रमाण पत्र प्रस्तुत करते हैं तो उनके नामांतरण की कार्यवाही करके उनके भूखंड के आवंटन पत्र सरकार प्रदान कर रही है। और अभी तक आठ प्रकरणों में विधिक वारिसों को भूखंड प्रदान करने का काम सरकार ने किया है। दूसरे प्रश्न भूखंडों की रजिस्ट्री नहीं की जा सकती के जवाब में कहा कि भू -स्वामित्व योजना आई है इसके अंतर्गत इन सारे भूखंडों को भू-सवामित्व योजना के अंतर्गत लेकर भविष्य में सरकार रजिस्ट्री का प्रावधान भी करने वाली है। राज्यमंत्री ने आगे कहा कि सरदार सरोवर परियोजना में जहां भूखंड आवंटित किए गये थे, उस जगह को आबादी घोषित करने की प्रक्रिया जारी करेंगे। और भू- स्वामित्व योजना जो मुख्यमंत्री जी ने लागू की है तो भू- सवामित्व योजना के अंतर्गत सभी भूखंड धारकों को उसका मालिकाना हक देने का काम करेंगे और निश्चित रूप से सभी भूखंड धारकों को मालिकाना हक देने का काम करेंगे और मालिकाना हक मिलने के बाद अगर वह भूखंड का विक्रय भी करना चाहते हैं तो वो कर पाएंगे।

रक्षाबंधन हमारी संस्कृति, परंपरा और पारिवारिक मूल्यों को सशक्त करने वाला त्योहार: उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

सरकार पूरी निष्ठा के साथ भाई की तरह निभा रही है प्रदेश की बहनों और माताओं के प्रति अपनी जिम्मेदारी

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने समस्त प्रदेशवासियों को रक्षाबंधन की शुभकामनाएं दी हैं। उपमुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि यह पर्व हमारी भारतीय संस्कृति की आत्मा को अभिव्यक्त करता है। रक्षाबंधन भाई-बहन के अटूट प्रेम, विश्वास और आपसी जिम्मेदारी का प्रतीक है। यह पर्व हमें नारी सम्मान, सुरक्षा और उनके सशक्तिकरण के प्रति हमारी जिम्मेदारियों का स्मरण कराता है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि देश में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में और प्रदेश में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मार्गदर्शन में महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु अनेक महत्वाकांक्षी योजनाएं चलाई जा रही हैं। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ', 'लाड़ली लक्ष्मी योजना' और 'मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना' जैसी योजनाएं बहनों को सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक रूप से सशक्त बनाने की दिशा में मील का पत्थर साबित हो रही हैं। उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन के अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी द्वारा 'लाड़ली बहना योजना' की राशि को रू. 1250 से बढ़ाकर रू. 1500 करना, मातृशक्ति के प्रति सरकार की संवेदनशीलता और प्रतिबद्धता को दर्शाता है। यह निर्णय बहनों के आर्थिक आत्मबल को बढ़ाएगा और उन्हें आत्मनिर्भरता की दिशा में और अधिक सशक्त बनाएगा। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि जैसे भाई अपनी बहनों के प्रति जिम्मेदार होता है, वैसे ही सरकार भी प्रदेश की बहनों और माताओं के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को पूरी निष्ठा के साथ निभा रही है। उन्होंने सभी प्रदेशवासियों, विशेषकर सभी बहनों को रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए उनके सुखद, सुरक्षित और आत्मनिर्भर भविष्य की कामना की है।

स्मार्ट मीटर की भ्रांतियां दूर करने बैतूल में आयोजित मीडिया वर्कशॉप में पत्रकारों के प्रश्नों के दिए जवाब

बैतूल जिले के स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं को 21 हजार से अधिक की छूट

बैतूल। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा 1 लाख 24 हजार 701 स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं को उनके मासिक विद्युत बिल में टाइम ऑफ डे छूट का लाभ देते हुए जुलाई 2025 में कुल 1 करोड़ 8 लाख 59 हजार 82 रुपये की रियायत दी गई है, जिसमें बैतूल वृत्त के 63 उपभोक्ताओं को 21 हजार 312 रुपए की दिन के टैरिफ में छूट मिली है। स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं को नए टैरिफ ऑर्डर के अनुसार अब खपत के आधार पर दिन के टैरिफ में सुबह 9 से शाम 5 बजे तक उपयोग की गई बिजली पर 20 प्रतिशत की छूट दी जा रही है। स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं हेतु यह सभी छूट अथवा प्रोत्साहन की गणना सरकारी सब्सिडी (यदि कोई हो) को छोड़कर की जा रही है। यह उपभोक्ता श्रेणियों के लिए विशिष्ट नियमों और शर्तों के आधार पर दिन के विभिन्न समय के दौरान खपत की अवधि के अनुसार ऊर्जा शुल्क पर लागू होगी। यह बात मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के महाप्रबंधक बैतूल वृत्त अनूप सक्सेना ने स्मार्ट मीटर से होने वाले लाभ तथा मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा उपभोक्ता हित में चलाई जा रही शासन की योजनाओं, जैसे ग्रामीण क्षेत्र में 5 रुपये में नवीन कनेक्शन, सोलर रूफटॉप आदि को आम लोगों तक पहुंचाने के उद्देश्य से गुरुवार को कलेक्टर कार्यालय बैतूल के सभाकक्ष में आयोजित मीडिया कार्यशाला में कही।

जिलेभर में धूमधाम से मनाया जायेगा रक्षाबंधन का त्यौहार, जगह-जगह लगी राखी की दुकान, बाजारों में रही भीड़

रक्षाबंधन आज, बहनें पूरा दिन बांध सकेंगी भाईयों को राखी

बैतूल। आज जिलेभर में रक्षाबंधन का त्यौहार बड़ी धूमधाम से मनाया जायेगा। इस इस बार रक्षाबंधन पर बहनों को राखी बांधने के लिए शुभ मुहूर्त का इंतजार नहीं करना पड़ेगा। 9 अगस्त शनिवार को मनाए जा रहे रक्षाबंधन पर दिनभर बहनें अपने भाइयों की कलाई पर राखी बांध सकेंगी। वैसे रक्षाबंधन को लेकर शुक्रवार भी बाजारों में भारी भीड़ रही। जगह-जगह राखी की दुकानें लगी थी। भाईयों को राखी बांधने के लिए बहनों ने खरीदी की। इससे बाजारों में भीड़ देखने को मिली और बाजार भी गुलजार हो गये है। कोठीबाजार, गंज क्षेत्र सहित अन्य जगहों पर करीब दो सैकड़ा से अधिक स्थानों पर राखी की दुकानें लगी हुई है। दुकानों पर बच्चों के लिए कार्टून वाली राखियां आई है, जो आकर्षण का भी केंद्र बनी हुई है। इसके अलावा बड़ों के लिए भी कई वैरायटी की राखियां दुकानों में उपलब्ध है। शहर के राखी व्यापारी मट्टू जैन, सूर्यकांत सोनी ने बताया कि रेशम की धागों और मेटल की राखियां बहनों की पहली पसंद बन गई है। वहीं कार्टून वाली राखियों में डोरेमोन, छोटा भीम, मोटू- पतलू, स्पाइडर-मैन, सुपरमैन, शक्तिमान, हेलीकॉप्टर, डिजिटल घड़ी सहित रुद्राक्ष और अन्य किरदारों की राखियां की भरमार है और यह राखियां बच्चों की पहली पसंद बनकर उभर रही है। इन राखियों की शुरुआत कीमत 10 रुपए से लेकर 150 और 350 रुपए तक है।

20 प्रतिशत बढ़े राखी के दाम - पिछले साल की तुलना में इस वर्ष 20 प्रतिशत तक राखी महंगी हुई है। पिछले वर्ष जो राखी 10 से 20 रुपए बिक रहीं थी, इस बार वहीं राखियां 30 रुपए तक में बिक रही है। राखी के अलावा नारियल, कपड़ा, सराफा सहित अन्य सामग्री के दामों में भी वृद्धि हुई। चांदी महंगी होने से इस बार इसकी राखी भी महंगी है। मामाजी ज्वेलर्स के नवीन तातेड़ ने बताया कि चांदी के भाव में वृद्धि होने से डिजाइन वाली राखियों के दामों में बढ़ोतरी की गई है। कम वजनी राखियों को आकर्षक ढंग से बनाया गया है। जिससे कि ग्राहकों को बजट के हिसाब से राखी मिल सके। राखी के बाद ही एक के बाद एक त्योहार आते हैं, ऐसे में व्यापारियों का कहना है कि महंगाई आगे भी जारी रहेगी।

शहर में सजी 200 से अधिक राखी की दुकानें - शहर के मुख्य चौक सहित मेन मार्केट में करीब 200 से अधिक छोटी-बड़ी राखी की दुकानें लगी है। महंगाई बढने से राखियां सहित चूड़े, रूमाल, शृंगार सामग्री के भाव में वृद्धि हुई है। राखी व्यापारी सूर्यकांत सोनी बताते हैं कि पिछले साल की तुलना में इस बार स्टॉक कम किया है। ग्राहकों को जो सबसे अधिक पसंद है, ऐसी राखियों की ही खरीदी की है। जिससे कि उन्हें कम कीमत में अच्छी वस्तु उपलब्ध कराई जा सके। जिसमें 10 से लेकर 350 रुपए तक की राखियां की कई वैरायटी रखी गई है। बच्चों की सभी पसंदीदा कार्टून राखी भी बाजार में उपलब्ध है।

बाजारों में रहे सुरक्षा के कड़े इंतजाम - रक्षाबंधन पर्व को लेकर बाजारों में ग्राहकों की भारी भीड़ रही। बहनों ने अपने भाइयों की कलाई पर बांधने के लिए रक्षासूत्र खरीदे, वहीं भाईयों ने अपनी बहनों को मनपसंद उपहार भेंट करने के लिए जमकर खरीदारी की। आज रक्षाबंधन है और इस दिन बहनें भाइयों का राखी यानी रक्षासूत्र बांधती है। इसे लेकर शुक्रवार शहर के बाजारों में ग्राहकों की खासी भीड़ देखी गई। रक्षाबंधन पर्व को लेकर शहर के प्रमुख व्यवसायिक क्षेत्र कोठीबाजार में सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए है। प्रमुख रूप से कोठी बाजार के सीमेंट रोड, लल्ली चौक पर यातायात व्यवस्था को सुचारू संचालित करने के लिए यातायात पुलिस द्वारा बेरिकेड्स लगाकर व्यवस्था बनाई गई है। इसके अलावा गंज क्षेत्र सहित कई पॉइंट पर पुलिस बल तैनात किया गया है।

दुर्लभ रोगों के इलाज का प्रमुख केंद्र है एम्स भोपाल, मरीजों को मिल रही विशेष सेवाएं

भोपाल। एम्स भोपाल चिकित्सा सेवाओं और अनुसंधान के क्षेत्र में लगातार उत्कृष्टता की ओर अग्रसर है। संस्थान को भारत सरकार के स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की दुर्लभ रोगों की राष्ट्रीय नीति के अंतर्गत दुर्लभ रोगों के लिए सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के रूप में मान्यता प्राप्त है। इस मान्यता के तहत एम्स भोपाल में उन रोगों के इलाज और देखभाल की सुविधा उपलब्ध है, जो विरले और आनुवंशिक कारणों से होते हैं। इनमें लाइसोसोमल स्टोरेज डिसऑर्डर, जेनेटिक मेटाबॉलिक बीमारियाँ, डुचेन मस्कुलर डिस्ट्रॉफी, स्पाइनल मस्कुलर एट्रोफी और अन्य वंशानुगत विकार शामिल हैं। दुर्लभ रोग अक्सर समय पर पहचाने नहीं जा पाते और सही इलाज के अभाव में मरीजों और उनके परिवारों को भारी मानसिक, शारीरिक और आर्थिक परेशानी झेलनी पड़ती है। ऐसे में एम्स भोपाल में यह सुविधा मरीजों और उनके परिजनों के लिए एक बड़ी राहत है। यह केंद्र न केवल इन रोगों की समय पर पहचान और उन्नत जांच की सुविधा प्रदान करता है, बल्कि पीड़ितों को वैज्ञानिक और समग्र इलाज भी उपलब्ध कराता है। यहाँ काम कर रही विशेषज्ञ टीम मरीजों को लंबे समय तक आवश्यक परामर्श और सहयोग भी प्रदान करती है। दुर्लभ रोगों के लिए यह सेंटर ऑफ एक्सीलेंस भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा वित्तपोषित है। दवाओं, उपकरणों और उपभोग्य सामग्रियों के लिए कुल रू. 9.4 करोड़ का अनुदान दिया गया है। यह सुविधा मध्य भारत के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि अब दुर्लभ रोगों से पीड़ित मरीजों को इलाज के लिए अन्य महानगरों में नहीं जाना पड़ेगा।

संपादकीय

राहुल का एटम बम!

कांग्रेस नेता और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने गुरूवार को भाजपा द्वारा वोट चोरी कर चुनाव जीतने तथा इसके लिए चुनाव आयोग को कटघरे में खड़ा करने का जो दांव चला है, वो कितना कारगर होगा, यह कहना कठिन है। लेकिन राहुल और उनकी सहयोगी विपक्षी पार्टियां चुनाव आयोग की विश्वसनीयता पर सवालिया निशान लगाने में जरूर कुछ कामयाब हो सकती है। राहुल गांधी ने प्रेजेंटेशन देकर देश को यह समझाने की कोशिश की कि चुनाव आयोग और भाजपा मिले हुए हैं। आयोग भाजपा के एजेंट की भूमिका ज्यादा निभा रहा है। यह कैसे संभव है कि जहां हम लोकसभा चुनाव में जीते, विधानसभा चुनाव में हार गए। लेकिन अब हम ऐसा नहीं होने देंगे और जो लोग ऐसा कर रहे हैं, उन्हें सत्ता में आने के बाद सजा जरूर देंगे। राहुल ने कुछ उदाहरण देकर यह बताया कि कहां कैसे मतदाताओं के नाम वोटर लिस्ट से उड़ा दिए गए तो कहां कुछ नाम जोड़ दिए गए। उन्होंने आयोग द्वारा चलाए जा रहे एसआईआर को पूर्ण फर्जीवाड़ा और राजनीतिक नीयत से चलाया जाने वाला अभियान बताते हुए चेताया कि आज देश में लोकतंत्र खतरे में है। राहुल ने यहां तक कहा कि सरकार, भाजपा और चुनाव आयोग की मिली भगत के कारण ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को लगातार तीसरा कार्यकाल मिला। राहुल ने यह भी कहा कि भारत का इलेक्शन सिस्टम अब मर चुका है। उधर इन आरोपों को बाद आयोग ने राहुल गांधी से कहा कि वो बाकायदा शपथ पत्र देकर साबित करें कि उनके द्वारा लगाए आरोप सत्य और प्रामाणिक है या फिर इन आरोपों के लिए माफी मांगें। लेकिन राहुल गांधी आयोग की इस बात को मानने से इंकार करते हुए कह रहे हैं कि उन्होंने जो कहा वह जनता के सामने सार्वजनिक रूप से कहा है। इसलिए शपथ पत्र देने का सवाल ही नहीं है। जहां तक माफी मांगने की बात है तो वो पहले भी कई बार अपने बयानो के लिए कोर्ट में माफी मांग चुके हैं। राहुल गांधी ने कहा था कि कर्नाटक के बंगलूरू मध्य लोकसभा क्षेत्र के महादेवपुरा विधानसभा क्षेत्र में भाजपा की जीत सुनिश्चित करने के लिए 1,00,250 नकली वोट बनाए गए। राहुल के प्रेजेटेशन को पूरे देश ने देखा और अब इस पर राजनीति भी शुरू हो गई है। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्य क्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि पहले चुनाव आयोग जबाव देता था, तो वो जवाब देने की बजाए बल्कि सत्ता पक्ष के नुमाइंदे की तरह उलटे इल्जाम लगाता है। राहुल गांधी के आरोपों पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए भाजपा प्रवक्ता डॉ. संबित पात्रा ने कहा कि राहुल की भाषा 'अलोकतांत्रिक और अशोभनीय' है। उन्होंने कहा कि अगर वे बम धमाका करेंगे, तो हम संविधान को बचाएंगे। इन राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोपों से हटकर से देखें तो राहुल ने चुनाव आयोग और सरकार को एक साथ घेरकर बड़ी राजनीतिक हलचल तो पैदा कर दी है। चुनाव आयोग उनके आरोपों का जवाब देता है या नहीं या फिर खारिज करता है, यह देखने की बात है। लेकिन इतना तय है कि विपक्ष बिहार में एसआईआर के मुद्दे को विधानसभा चुनाव तक खींचना चाहता है। राहुल गांधी की यह मुहिम उसी का हिस्सा है और सुनियोजित रणनीति है। मसलन अगर कांग्रेस और विपक्षी महागठबंधन किसी राज्य में चुनाव जीतता है तो कहा जाए कि भाजपा और चुनाव आयोग द्वारा उसे हराने की कोशिशों के बाद हम चुनाव जीते और यदि हारता है तो यह कहा जाएगा कि हमने तो पहले ही कहा था कि हमे हराने का षड्यंत्र किया गया था। लेकिन राहुल अगर आरोप सिद्ध नहीं कर पाए तो यह एटम बम फुस्स हो सकता है।

अमेरिका में 'नो किंग्स' आंदोलन का परिणाम

नजरिया

रमाकांत नाथ
लेखक ओडिशा के वरिष्ठ पत्रकार हैं।

ट्रम्प द्वारा विश्व व्यापार पर एकाधिकार स्थापित करने और 'व्यापार कर' (टैरिफ) का भय दिखाकर अमेरिका को पुनर्प्रतिष्ठित करने का जो प्रयास किया जा रहा है, उससे विश्व में आर्थिक असमानता बढ़ रही है और विश्व अर्थव्यवस्था में एक और मंदी का आभास हो रहा है। अमेरिका में घरेलू उथल-पुथल, ट्रम्प की आर्थिक और विदेश नीतियों में समन्वय का अभाव और 'अमेरिका को फिर से महान' बनाकर स्वयं को स्थापित करने का जो प्रयास किया जा रहा है, उसके भयंकर परिणाम हो सकते हैं, जैसा कि अमेरिकी जनता के 'नो किंग्स' आंदोलन की प्रतिक्रिया से स्पष्ट है।

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के खिलाफ अमेरिका में ही आंदोलन तेज हो रहा है, हालांकि उनके दूसरे कार्यकाल को अभी केवल सात महीने ही हुए हैं। 14 जून 2025 को हुआ 'नो किंग्स' प्रदर्शन, जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 'नो डिक्टेटर' या 'नो टायरेंट्स' विरोध के रूप में जाना जाता है, प्रदर्शनों की एक लंबी श्रृंखला थी। बडे पैमाने पर ट्रम्प की नीतियों और उनकी कार्रवाइयों के खिलाफ, जिसमें उनकी कथित फासीवादी प्रवृत्ति और लोकतांत्रिक पतन शामिल है, यह विरोध हुआ था। 'नो किंग्स' प्रदर्शन अमेरिकी सेना की 250वीं वर्षगांठ परेड और ट्रम्प के 79वें जन्मदिन पर हुआ था। आयोजकों के मुताबिक फिलाडेल्फिया में प्रमुख कार्यक्रम सहित 2100 से अधिक शहरों और कस्बों में 50 लाख से अधिक लोगों के अलावा 20 अन्य देशों में यह आंदोलन किया गया। ट्रम्प के खिलाफ चल रहे इस आंदोलन ने उनकी योग्यता, पारदर्शिता और कामकाज पर कई सवाल खड़े कर दिए हैं। 'मेक अमेरिका ग्रेट अगेन' (मागा) के नारे के साथ सत्ता में आए राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प अब अमेरिका और उसके करोड़ों नागरिकों के लिए कई परेशानियों का सबब बन गए हैं। सत्ता संभालने के कुछ ही दिनों में ट्रम्प ने दुनिया में शांति स्थापित करने, गाजा में फिलिस्तीन-इजरायल युद्ध और रूस-यूक्रेन युद्ध को समाप्त करने का वादा किया था, लेकिन दुनिया में शांति स्थापित नहीं हो पाई, उलटे कई देशों के बीच नए युद्ध शुरू हो गए।

ट्रम्प द्वारा विश्व व्यापार पर एकाधिकार स्थापित करने और 'व्यापार कर' (टैरिफ) का भय दिखाकर अमेरिका को पुनर्प्रतिष्ठित करने का जो प्रयास किया जा रहा है, उससे विश्व में आर्थिक असमानता बढ़ रही है और विश्व अर्थव्यवस्था में एक और मंदी का आभास हो रहा है। अमेरिका में घरेलू उथल-पुथल, ट्रम्प की आर्थिक और विदेश नीतियों में समन्वय का अभाव और 'अमेरिका को फिर से महान' बनाकर स्वयं को स्थापित करने का जो प्रयास किया जा रहा है, उसके भयंकर परिणाम हो सकते हैं, जैसा कि अमेरिकी जनता के 'नो किंग्स' आंदोलन की प्रतिक्रिया से स्पष्ट है।

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने तीन वर्षों से चल रहे रूस-यूक्रेन युद्ध को समाप्त करने का प्रयास किया था। यूक्रेन को अमेरिकी हथियार और वित्तीय सहायता बंद करने, रूस से बातचीत करने और कुछ दिनों का युद्ध-विराम करवाने के बाद भी जब रूस-यूक्रेन युद्ध नहीं रुका, तो ट्रम्प ने फिर से यूक्रेन को अमेरिकी हथियार और वित्तीय सहायता देना शुरू कर दिया, जो एक दोहरी नीति बन गई। अब जब अमेरिका के लिए रूस को किसी भी तरह से काबू में रखना संभव नहीं है, तो रूस-यूक्रेन युद्ध जारी रखने के अलावा कोई और रास्ता नहीं बचता। ईरान को बारह दिन की मोहलत देने के दो दिन बाद ही उसके परमाणु प्रतिष्ठानों पर हमला करना अमेरिका को महंगा पड़ गया है। अमेरिका न तो ईरान के परमाणु कार्यक्रम को रोक पा रहा है, न ही उस पर प्रतिबंध लगा पा रहा है और न ही उस पर दोबारा हमला कर पा रहा है।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की इस तरह की बयानबाजी पूरी दुनिया में चर्चा का विषय बन गई है। कहा जा रहा है कि डोनाल्ड ट्रंप ने भारत-पाकिस्तान और इजरायल-ईरान के बीच शुरू हुए युद्धों को रोक दिया था, लेकिन इन देशों के बीच आपसी रिश्ते बिल्कुल भी अच्छे नहीं हैं। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि जो युद्ध-विराम हुआ है, वह कब तक लागू रहेगा। इसके बाद इजराइल-सीरिया के बीच फिर से शुरु हुए युद्ध में राष्ट्रपति ट्रम्प ने युद्ध-विराम घोषित कर दिया। इसी तरह वे थाईलैंड और कंबोडिया के बीच युद्ध रोकने के लिए फतवा जारी कर रहे हैं।

दुनिया में जहां भी युद्ध और गृहयुद्ध की स्थिति है, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प वहां घुसकर और आर्थिक प्रतिबंधों की धमकी देकर शांति स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं; लेकिन ट्रम्प के इन प्रयासों पर कोई ध्यान नहीं दे रहा है। 'नोबेल शांति पुरस्कार' की उम्मीद में ट्रम्प ऐसी बयानबाजी कर रहे हैं और पूर्व राष्ट्रपति बराक हुसैन ओबामा की तरह यह पुरस्कार जीतकर खुद को दुनिया का रक्षक और शांति का अग्रदूत कहलाने को आतुर हैं।

गाजा में अमेरिका द्वारा प्रायोजित नरसंहार के लिए अमेरिका मुख्य रूप से जिम्मेदार है, जिसमें 80,000 से अधिक लोग मारे गए हैं और वहां जीवन असंभव हो गया है। अमेरिका इजरायल के माध्यम से आतंकवाद और दमन के जरिए पूरी दुनिया में भय का माहौल बनाने की कोशिश कर रहा है। कोई नहीं कह सकता कि एशिया, मध्य-पूर्व, यूरोप आदि में क्षेत्रीय युद्धों का माहौल कब विश्वयुद्ध में बदल जाएगा। ऐसे में अमेरिका की घरेलू समस्याएं काफी बढ़ गई हैं और अमेरिकी कहने लगे हैं कि इन सभी समस्याओं के लिए डोनाल्ड ट्रम्प की सरकार और प्रशासन पूरी तरह जिम्मेदार है। ट्रम्प के विरोध में हुए आंदोलन को 'नो किंग्स' नाम दिया गया है जिसका मतलब है कि अमेरिकियों को किसी राजा की ज़रूरत नहीं है; वे किसी को राजा के रूप में नहीं देखना चाहते। आमतौर पर कहा जाता है कि 'नो किंग्स' आंदोलन के पीछे ट्रम्प और उनकी 'रिपब्लिकन पार्टी' के खिलाफ अमेरिका के आम लोगों की आवाज है। यह आवाज जो आज अमेरिका में सुनाई दे रही है, एक दिन दुनिया के दूसरे देशों में भी सुनाई देगी। जहाँ भी तानाशाहों ने सत्ता हथियाकर खुद को राजा के रूप में स्थापित किया है, वहाँ भी 'नो किंग्स' आंदोलन होगा।

अमेरिका के सभी 50 राज्यों में 'नो किंग्स' आंदोलन शुरू हो चुका है, जिसमें अमेरिका समेत कनाडा, जापान, मैक्सिको और यूरोप के 20 देश, जिनमें गुयाना, उत्तरी मारियाना, आइसलैंड, प्यूर्टोरिको, वर्जिन द्वीप समूह शामिल हैं। यहां शुरू हुए 'नो किंग्स' आंदोलन से यह संदेश जाता है कि दुनिया में भय का माहौल नहीं होना चाहिए, दुनिया में तानाशाही की कोई ज़रूरत नहीं है, राजतंत्र की कोई ज़रूरत नहीं है। अमेरिकी जनता का यह आंदोलन स्पष्ट रूप से घोषणा कर रहा है कि 'हम निरंकुशता को अस्वीकार करते हैं, हम भय को अस्वीकार करते हैं और हम अत्याचारियों को अस्वीकार करते हैं।' (सप्रेस)

रक्षाबंधन

विवेक कुमार मिश्र
लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

रक्षाबंधन जीवन रक्षा के निर्वाह का भी सूत्र

रक्षाबंधन का त्यौहार भाई बहन के प्रेम, समर्पण और एक दूसरे की रक्षा के भाव को लिए हुए आता हैं। यहां रक्षा के हर सूत्र में भाई बहन को यह विश्वास और संकल्प दिलाया जाता है कि वह उसकी रक्षा का दायित्व निभायेगा। भाई बहन के बीच जो परस्पर प्रेम है, समर्पण है वह इस पर्व पर खुल कर सामने आता है। यहां किसी को किसी से कुछ नहीं चाहिए, सब एक दूसरे की खुशी चाहते हैं। जो जहां है जहां रहे वह खुश रहे और इस विश्वास की रक्षा करता रहे की भाई-बहन दोनों एक दूसरे के सुख-दुःख को हरने के लिए बने हैं। रक्षाबंधन का त्यौहार आता तो दूर-दूर से भाई घर पहुंच जाते बहनें प्रतीक्षा करती कि आज के दिन भाई आयेगा या बहन भाई के घर पहुंच जाती। जो भी संभव होता जिसे भी आसानी होती वह पहुंच जाता और भाई बहन का यह प्रेम से पूरित रक्षाबंधन का पर्व मनाया जाता। इस पर्व पर आंगन अलग ही सज जाता। आंगन का दृश्य कुछ यों बनता कि एक साथ स्नान कर सारे भाई पंक्ति में बैठ जाते और बहनें थाल में रक्षासूत्र सजा कर लाती और एक एक कर भाई के कलाई पर बांधती जाती। वह भाई बहुत किस्मत वाला होता जिसकी कलाई पर एक से अधिक राखी बंधी होती। बार-बार भाई अपने हाथों को देखता कि उस पर कैसे कैसे रंग से सजी और किस तरह की राखी बंधी है। यह रक्षासूत्र प्रतिष्ठा का, भाई बहन के प्रेम का, विश्वास का और समर्पण का प्रतीक होता। यहां भाव महत्वपूर्ण होता न की कौन राखी कहां से आई है या कितने की है या यह कहें कि राखी सोने चांदी की तो नहीं है। हो तो भी उसका वह मूल्य नहीं होता जो मूल्य राखी के भाव सूत्र में होती है। बड़ी बहन जिसे सब दीदी कहते, मंझली बहने और छोटी बहन एक एक कर भाई के कलाई पर राखी बांधती जाती। एक से अधिक होते होते होते जब छः सात राखी बंध जाती तो पूरा हाथ ही भर जाता और इस भरे हुए हाथ को लेकर भाई इतराता हुआ घूमता। राखी को बांधकर भाई घूमने निकल जाता। बार बार राखी से भरे हाथ देखता। अब भाई के हाथ पर एक ही राखी होती या वह भी नहीं होती। ज्यादातर एक ही भाई या एक ही बहन होती है या वह भी नहीं होती। अब मुंहबोली बहन या भाव के भाई होते सगे भाई बहन तो कम ही होते जा रहे हैं जो हमारे पारिवारिक भाव और जीवन दशा को अलग से ही संकेतित करते हैं।

रक्षाबंधन का पर्व भारतीय समाज और संस्कृति के उत्सव प्रियता और भाई-बहन के परस्पर प्रेम, समर्पण रक्षा और अस्तित्व का पर्व है। यहां रक्षा का जो सूत्र बहन, भाई के कलाई पर बांधती है वह एक तरह से अमिट भाव की तरह होता है। रक्षा का सूत्र जीवन रक्षा के निर्वाह का भी सूत्र होता है। बहन भाई के कलाई पर रक्षा सूत्र बांधती है तो यह भाव होता है कि भाई को लंबी उम्र मिले। वह यशस्वी बने और जीवन पथ पर सफल रहे, वहीं भाई! बहन को यह विश्वास दिलाता है कि वह उसकी रक्षा का दायित्व उठायेगा। उसकी रक्षा करेगा। रक्षाबंधन का त्यौहार सीधे-सीधे भाई के लिए राखी खरीदने से लेकर और उसके कलाई पर राखी बांधने तक चलता है। बहन थाली में सजाकर राखी लाती है राखी के साथ कुमकुम रोली अक्षत और मिठाई होती है। जब बहन राखी बांधती है तो भाई थाली में अपनी क्षमता अनुरूप रुपए रखता है। यह सब बचपन से हम सब देखते आ रहे हैं। हर साल आंगन में राखी का त्यौहार इसी तरह सज धज के साथ आता था। आंगन भाई-बहन के इस अटूट प्रेम संबंधों से सज जाता था। याद आता है कि आंगन में हम सारे भाई कतारबद्ध होकर बैठे होते और बहने एक-एक कर राखी बांधती जाती। देखते-देखते कलाई पर एक साथ 6-6 या उससे भी ज्यादा राखी सज जाती। इस राखी सजे हाथ को बार बार भाई देखता। राखी के रंग और सूत्र लुभाते रहते हैं जिसे भाई देखता रहता है। इस राखी के धागे को स्वास्थ्य, रक्षा और सफलता का सूत्र भी समझा जाता था। अब कहां इस तरह के आंगन बचे हैं? और कहां वह सारे लोग। बचपन बीतने के साथ ही भाई-बहन सब अपनी अपनी मंजिलों पर अपने-अपने लक्ष्य पर और अपने-अपने सपनों के शहर में चले जाते हैं। गांव का घर सूना, आंगन सूना, अपने ढंग से उनकी राहे देखता रहता है। अब आंगन में सारे भाई-बहन कहां आ पाते। सब न जाने कहां कहां चले गए। पर स्मृति में वहीं घर, वहीं आंगन और वहीं रक्षाबंधन का पर्व घूमता रहता है। अब जो जितनी दूर गया उसकी आंखों में वह आंगन और तेजी से घूमने लगता है। वह समय चक्र को देखता है कि समय किस तेजी से भाग रहा है कहां भाई बाजार से राखी खरीद कर लाता और बहन डिजाइन आदि बताती और फिर रक्षाबंधन के दिन सारी राखी भाई के कलाई पर सज जाती और रेडियो पर राखी के दिन के गाने बज रहे होते, भाई बहन के परस्पर प्रेम की कहानियां सुनाई जाती। लगातार भाई को याद दिलाया जाता कि तुम्हें बहन की रक्षा करनी है। और ये सब केवल बातें नहीं थी यह सब हमारी संस्कृति की गहरी जड़ों से निकली ध्वनियां थी....जिनका खास अर्थ होता और जिसे बचपन से ही मन पर बिठा दिया जाता था। पर देखते देखते गांव घर आंगन सब दूर हो जाते और नये शहर नई दुनिया नये सिरे से सामने आ जाते। भाई-बहन सब एक साथ नहीं होते सब अपने-अपने शहर में अपनी-अपनी दुनिया में अपने-अपने जीवन साधनों के साथ रह रहे हैं। ऐसे में राखी अब लिफाफे में बंद होकर दूर-दूर शहरों तक चली जाती है। अब राखी आनलाईन प्लेटफार्म के जरिए भी आ जाती। तकनीक और बाजार के द्वारा लगातार हमारी दुनिया को सुविधाजनक बनाया जाता है। इस क्रम में हमारे पर्व त्यौहार भी आते हैं। बाजार इस समय राखी से सजा है तरह तरह की राखियां टंगी है, रेशम के सूत्र से लेकर सोने चांदी के सूत्र तक और इन सबके साथ राखी का भाव बंध की भाई के हाथ पर बहना को राखी बांधनी है। दूर देश तक इस पर्व की सुगंध व्याप्त रहती है।

भाई बहन देश विदेश कही भी हों, रक्षा सूत्र से इस तरह बंधे होते हैं कि दूरियां महसूस ही नहीं होती। जहां-जहां भाई होते वहां वहां राखी और रक्षा सूत्र नई सज धज के साथ नए नए ढंग से पहुंच जाते हैं। यहां राखी का वही भाव होता जो बचपन से मन पर बसा है। लिफाफे में बंद राखी रक्षाबंधन के दिन उसी भाव से खुलती। एक एक कर थाली में सजाकर रख ली जाती यहां भी राखी के साथ रोली, अक्षत और मिठाई सज जाती और उसी भाव से राखी आज भी बंधती है। हमारे पर्व जीवन उत्सव व संस्कृति के संदर्भ को ऐसे लिए आते हैं कि इनके साथ ही हमारा जीवन चलता हुआ दिखता है। ये पर्व जीवन को संस्कृति से चेतना से मानवीय राग से, अस्तित्व से और मनुष्यता वोध से जोड़ने का काम करते हैं। ये बताते हैं कि हम इस तरह एक सूत्रता में बंधे हैं कोई अकेला नहीं है सबके साथ कोई और है जो उसका साझीदार है, उसके साथ सात समंदर तक चलता रहता है यहां दूरियां भी निकटता में बदल जाती और इन सबके पीछे हमारे पर्व मानवीय संबंधों को लेकर ऐसे खड़े हैं कि ये न हो तो कुछ बचे ही नहीं। यहीं से यह सीख मिलती है कि हमें अपनी पारिवारिकता के साथ, अपने आसपास के साथ अपने परिसर के साथ और अपने परिवेश के साथ एक दूसरे को जोड़ते हुए आगे बढ़ते जाना है।

संस्कृत दिवस

प्रो. वत्सला
(लेखिका एवं शिक्षाविद्)

संस्कृत ही संस्कृति और संस्कार की त्रिवेणी

संस्कृत विश्व की सभी भाषाओं में प्राचीनतम एवं वैज्ञानिक भाषा है, इसमें कोई विसंवाद नहीं है। इसका विशाल वाङ्मय सभी भाषाओं के साहित्य से समृद्ध है। ज्ञान -विज्ञान, धर्म, दर्शन, अध्यात्म, योग, सभ्यता, संस्कृति, साहित्य, कला, संगीत नीति, उपदेश, मानव धर्म, जीवन मूल्य, सर्वजन सुखाय, सर्वजन हिताय का समग्र भंडार इसी भाषा में निबद्ध है। विश्रुत विश्व गुरु सुरसेवित भारत भूमि की वाणी देव वाणी (सुरभारती) संस्कृत है। भाषा विज्ञान में भाषाओं के वर्गीकरण से पृथक रखते हुए हम कह सकते हैं कि यह सभी भाषाओं की जननी है जैसे एक ही माता की विभिन्न प्रकार की संतानें हुआ करती है। वैसे ही संस्कृत से विभिन्न प्रकार के भाषाओं की उत्पत्ति हुई हैं।

अंग्रेजों के भारत आगमन से पूर्व संस्कृत राजभाषा थी किंतु लॉर्ड मैकाले ने 1835 में संस्कृत की जगह अंग्रेजी को राजभाषा घोषित कर दिया। यद्यपि उस समय भी विदेशी विद्वानों के द्वारा संस्कृत का अध्ययन किया जा रहा था और संस्कृत की प्रतिष्ठा पूरे यूरोप में बढ़ने लगी थी। स्वतंत्रता से पूर्व और स्वतंत्रता के बाद भी हर कालखंड में संस्कृत का अस्तित्व कायम था, किंतु उसका प्रयोग या प्रचलन न्यूनतम होता गया। संस्कृत भाषा से विदेशी तो आकृष्ट थे इसके ही साथ ही देश में विद्यमान संस्कृत प्रेमियों ने भी संस्कृत के अस्तित्व को अपनी लेखनी से जीवित रखा था। हमारे ऋषि मुनी अध्ययन के प्रति इतने निष्ठावान थे कि उन्होंने विद्यार्थियों के शिक्षारंभ के लिए एक निश्चित तिथि का विधान किया था। इसी तिथि से शिक्षण सत्र का आरंभ होता था। सत्रारम्भ की तिथि होती थी श्रावण पूर्णिमा यानी रक्षाबंधन का दिन।

वर्ष 1969 में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के आदेश से केंद्रीय तथा राज्य स्तर पर संस्कृत दिवस मनाने का आदेश पारित किया गया। तब से संपूर्ण भारत में संस्कृत दिवस श्रावण पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। इस दिन का चयन इसलिए किया गया क्योंकि प्राचीन भारत में इसी दिन से शिक्षण सत्र शुरू होता था। इसी दिवस से वेद पाठ का आरंभ होता था तथा छात्र शास्त्रों के अध्ययन का आरंभ इसी दिवस से करते थे। पौष माह की पूर्णिमा से श्रावण माह की पूर्णिमा तक अध्ययन बंद हो जाता था। प्राचीन काल में पुनः श्रावण पूर्णिमा से पौष पूर्णिमा तक अध्ययन चलता था इसलिए इस दिन को संस्कृत दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन के चुनाव का जो कारण था, उसका सम्बन्ध भारत व उसके शाश्वत धर्म से है। मनुस्मृति के अनुसार, 'श्रावण्यां प्रौष्ठपद्यां वा उपकृत यथाविधिः।' यह दिन आदिकाल से गुरुकुलों में वेद अध्ययन प्रारंभ एवं उपनयन संस्कार का रहा है इसलिए इस दिन का चयन किया गया ताकि संस्कृत परंपरा में यह दिन अक्षुण्ण रह सके। आजकल इस दिवस को अपनी सुविधानुसार आगे पीछे किसी दिन भी मना लिया जाता है।

सनातन धर्म की भांति संस्कृत भाषा भी सनातन है। 21 जून को पूरी दुनिया में मनाए जाने वाला योग दिवस इसका प्रमाण है। संस्कृत पूरी मानवता को जोड़ने का सामर्थ्य रखती है क्योंकि यह भाषा किसी धर्म, राष्ट्र, जाति के बंधन में नहीं बांधी जा सकती है। जीवन मूल्यों और मानवीय मूल्यों का आगार है- संस्कृत भाषा। मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव, वसुधैव कुटुंबकम्, आचारः परमो धर्म, न ही सत्यात् परो धर्मः, अहिंसा परमो धर्मः ,धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः, परोपकाराय सतां विभूतयः आदि के संदेश मनीषियों ने संस्कृत वाङ्मय में ही दिया है।

सारा आध्यात्मिक ज्ञान संस्कृत साहित्य में ही भरा पड़ा है। संस्कृत संस्कार से युक्त व्यक्ति के चरित्र को सदाचारवान बनती है। आज भारतवर्ष के कई राज्यों के कुछ गांवों में संस्कृत बोली जाती है। संस्कृत भारती संस्कृत के प्रचार प्रसार के लिए सन्नद्ध है जिसके कारण संस्कृत बोलने वालों की संख्या बढ़ रही हैं। संस्कृत के उत्थान एवं संवर्धन के लिए हमारी सरकार ने अनेक विश्वविद्यालयों तथा अनेक संस्कृत अकादमियों की स्थापना की है लेकिन ये सारे तंत्र भी राजनीतिक हस्तक्षेप से ग्रसित है इसलिए संस्कृत के अधःपतन में सरकार के साथ-साथ संस्कृत के अपने लोग भी जिम्मेदार हैं। यदि राष्ट्र के कल्याण की कामना करते हैं तो संस्कृत के महत्व को राष्ट्र को समझना होगा और वह भाषा जिस प्रकार उस महत्व को प्राप्त कर सकें वैसा सफल प्रयास करना चाहिए। संस्कृत को करुणा की आवश्यकता नहीं है उसे श्रद्धा पूर्वक स्वीकार करने की आवश्यकता है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

प्रीतम लखवाल
लेखक व्यंग्यकार हैं।

तलवार की धार पर भारी जुबान

सोलह संस्कारों में से एक विवाह संस्कार जीवन का वह अंधा मोड होता है, जहां कोई भी चेतावनी का बोर्ड नहीं लगा होता कि आगे...। फिर भी इस संस्कार के पीछे लोग भागते जरूर हैं। दुर्घटना से देर भली के जगह-जगह पर लगे संकेतकों से भी लोग समझ नहीं पाते।

इस संस्कार में एक बहुत अजीब सी रस्म होते देखी गई है। दूल्हे के हाथ में तलवार देखकर लगा कि यह बला क्यों? वैसै इस परंपरा को जीवंत रखने वाली बुजुर्ग पीढ़ी इसे सुरक्षा के संकल्प से जोड़कर बताते हैं। इधर, दूल्हा भी सीना तान के घोड़े पर तलवार लेकर ऐसे बैठता है, जैसे किसी रियासत का राजकुमार आखेट पर निकला हो। यह अलग बात है कि उसकी तलवार म्यान में होती है, लेकिन तलवार का खौफ शायद वधु पक्ष में भी शायद ही होता हो। इधर, वधु पक्ष में वधु की सहेलियां भी कम नहीं होती। वो बार-बार अपनी प्रिय सहेली को देखकर अपने होने वाले कथित जीजा (यहां स्पष्ट करता चलूं कि यह जीजा नामक प्राणी इस डिजिटली युग में जीजू हो गया है) के साथ चिरौरी करती हैं। शादी में तलवार का रोल मुझे तो सिर्फ वैसा ही लगा, जैसे किसी लोन पर जीएसटी चुकाने के बाद बैंक वाले को ब्याज अलग से चुकाना, क्योंकि न तो जीएसटी हमारे कोई काम की, न बैंक को चुकाया ब्याज हमारे लिए फायदे का सौदा। खैर, शादी के बाद जब दूल्हा दुल्हन को लेकर घर आ जाता है तो घर के रीति-रिवाजों और छेड़खानियों की गवाह तो वह तलवार रहती है और देवता धौकने के बाद तलवार को ऐसे तजा जाता है, जैसे उसमें कोई भूत-पिशाच निवास करता हो। इधर, तलवार म्यान में ही रहती है, लेकिन दुल्हन की तलवार की धार तेज हो जाती है। मसलन उसकी जुबान तलवार की धार का पानी उतार चुकी होती है और उसके वार से घर का हर सदस्य आह-वाह करता रहता है। इधर, तलवार की धार कुंद होने के साथ ही जुबान की धार की बात निकली है तो याद आया कि हमारे देश की एक खास म खास प्रजाति, जिसे नेता कहते हैं, वो मंत्री भी हो सकता है तो विधायक भी। गली-मोहल्ले का छुट भैया भी हो सकता है या फिर किसी उच्च पद पर आसीन दबंग भी। इनकी जुबान तो तलवार की धार से कही तेज और दोनों ओर होती है। इनकी जुबान यह नहीं देखती कि इसके दो तरफा प्रहार से किनका संहार होगा और किनकी झोली भर जाएगी। बस वे तो चलाते भर हैं।

ठीक उसी तरह जैसे शैल चतुर्वेदी की मशहूर कविता '...और चल गई' की तर्ज पर इनकी भी चल ही जाती है। इसके चलने से भला किनका होता है। ये तो खुद ये भी नहीं जानते, लेकिन इनके सोशल मीडिया के वीर सैनानी जरूर जानते हैं। इसलिए तलवार को म्यान में ही रहने दो, लेकिन जुबान की म्यान कहां से लाएं? इस बारे में कालांतर से शोध जारी है अभी तक परिणाम नहीं आया, उस पटवारी परीक्षा की तरह जो बार-बार निरस्त हो जाती है। इधर, आधुनिक रील्स युग में तलवार का स्वरूप भी वामन हो गया है। अब वह हथेली में भी नहीं आती। यहां तलवार का रूप घटना वहां जुबान की धार का विकराल होने से रिवाजों में यह ऋतु परिवर्तन की तरह है।

रक्षा बंधन
अशोक जोशी
(लेखक एवं समीक्षक)

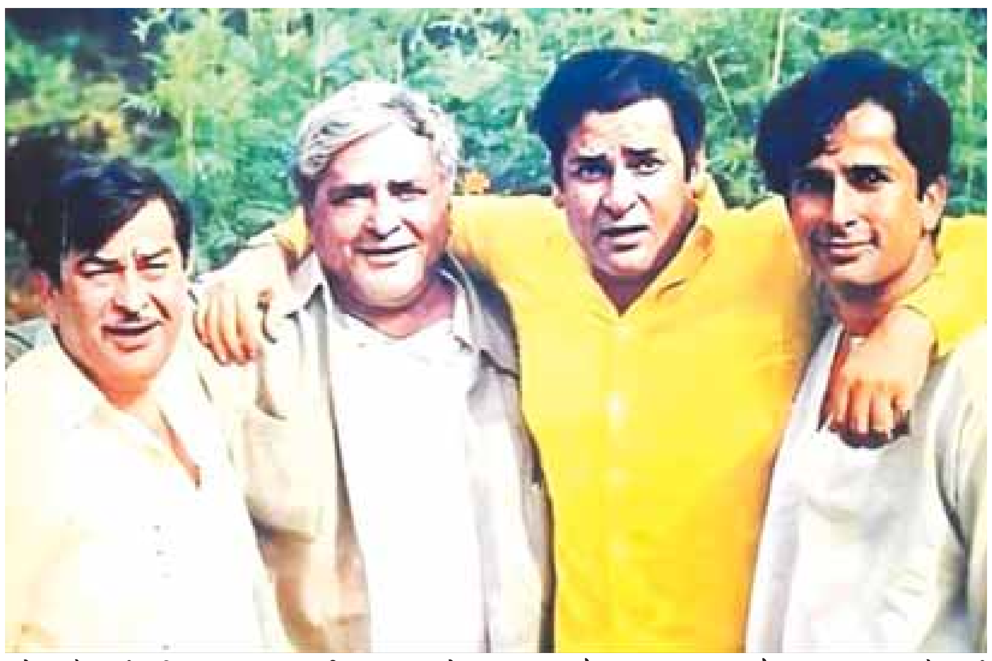

सिनेमा में भी भाईयों ने बिखेरा है जलवा

राखी हो या भाई दूज, भाई तो हमेशा की तरह इन पर्वों को मनाते रहते हैं। बहनें सज संवरकर इन त्योहारों की खास तैयारी करती हैं। वैसे यह हमारे समाज की परम्परा रही है कि हम बहन-बेटियों को खास तरजीह देते हैं। लेकिन, इस तरह भाईयों को अनदेखा करना भी उचित नहीं। इस बार रक्षाबंधन पर भाइयों पर आधारित फिल्मों और फिल्मी भाईयों की बात कर ली जाए तो क्या हर्ज!

वैसे तो हिंदी सिनेमा में ज्यादातर फिल्में बहनों पर आधारित छोटी बहन, बड़ी बहन, मझली दीदी जैसी फिल्में बनी है, तो भाइयों पर आधारित फिल्में भी कम नहीं। यदि इस तरह की फिल्मों के शीर्षकों पर नजर दौड़ाई जाए तो भाई शीर्षक से जुड़ी फिल्मों की संख्या बहन शीर्षक से ज्यादा निकलेगी। यकीन न हो तो गिनकर देख लीजिए। भाई, दो भाई, भाई भाई, बड़ा भाई, चल मेरे भाई, मुन्नाभाई एमबीबीएस, लगे रहो मुन्नाभाई ,मेरे भैया, बिग ब्रदर, हैलो ब्रदर, गुरु भाई, भाई हो तो ऐसा और 'मैं और मेरा भाई' जैसी फिल्मों की लंबी फेहरिस्त है। फिल्मी गानों में भी भाइयों ने बहनों की तरह ही अपना जलवा बिखेरा है। इन गीतों में चल मेरे भाई तेरे हाथ जोड़ता हूं, देखो रे हुआ भाई भाई से जुदा, भैया मेरे राखी के बंधन, मेरे भैया मेरे चंदा, चंदा रे भैया से कहना और राखी का मतलब प्यार है भैया प्रमुख हैं।

हमारे यहां यदि रागिनी और पद्मिनी से लेकर करीना और करिश्मा जैसी बहनों ने नाम कमाया, तो भाइयों ने भी अभिनय के क्षेत्र में अपना दमखम दिखाया। इनमें कुछ भाई सफल तो कुछ असफल रहे। सफल भाईयों में अशोक कुमार और किशोर कुमार हैं, तो इनके तीसरे भाई अनूप कुमार ज्यादा चल नहीं पाए। भाईयों में कपूर ब्रदर्स ने बहुत ज्यादा नाम कमाया है, चाहे वह राज कपूर, शम्मी कपूर और शशि कपूर हो या ऋषि कपूर और रणधीर कपूर। जरूरी नहीं कि कपूर भाई का होना सफलता की गारंटी ही है। यदि ऐसा होता तो राज कपूर के तीसरे बेटे राजीव कपूर और अनिल कपूर के छोटे भाई संजय कपूर भी सफलता के झंडे गाड़ते। लेकिन, ऐसा नहीं हुआ।

कई बार ऐसा भी हुआ है एक भाई के सफल होने पर दूसरा भाई उसी तरह की सफलता की आस लगाए सिने मैदान में कूद पड़ता है। लेकिन, उसे असफलता ही हाथ लगती है। दिलीप कुमार की सफलता से प्रेरित होकर हीरो बने उनके भाई नासिर खान ज्यादा नहीं चल पाए। देव आनंद के भाई विजय आनंद और चेतन आनंद ने कुछ फिल्मों में अभिनय पर हाथ आजमाए, लेकिन वह बेहतरीन निर्देशक जरूर बनें लेकिन दूसरे देव आनंद नहीं बन सके। सुनील दत्त चाहकर भी अपने भाई सोमदत्त को सफलता का दीदार नहीं करवा पाए। मनोज कुमार अपने भाई राजीव गोस्वामी को अभिनेता बनाने के चक्कर में पारिवारिक कलह में ऐसे फंसे कि उबर नहीं पाए।

प्रेमनाथ के साथ उनके भाई राजेन्द्र नाथ तो सफल रहे, लेकिन नरेन्द्र नाथ ज्यादा नहीं चल सके। आमिर खान के भाई फैजल खान, फिरोज खान के भाई संजय खान और अकबर खान, और सलमान खान के भाई अरबाज खान और सोहेल खान की कहानी भी कुछ ऐसी ही है। देओल बंधुओं की भी यही कहानी है। उनके छोटे भाई बॉबी देओल भी ज्यादातर फ्लॉप ही रहे। वो तो 'एनिमल' और ओटीटी की 'आश्रम' ने उन्हें तिनके का सहारा दे दिया वर्ना वह भी फ्लॉप भाइयों की कतार में खड़े मिलते।

अभिनय के अलावा दूसरे क्षेत्रों में भी भाईयों ने अपनी किस्मत आजमायी है। गायन में जिस तरह मंगेशकर बहनों का एक छत्र राज्य चलता आया। लेकिन, उनके भाई हृदयनाथ ज्यादा कुछ नहीं कर सके। भाईयों में ऐसी जोडी नहीं दिखाई दी जिन्होंने गायन में अपना वर्चस्व कायम किया हो। कव्वाली के मैदान में जरूर कुछ भाईयों ने नाम कमाया। संगीत के क्षेत्र में कल्याण जी आनंद जी के बाद जतिन-ललित और आनंद-मिलिंद ने अच्छा नाम कमाया । लेकिन कोई भी कल्याणजी आनंदजी की तरह लम्बे समय तक नहीं टिक पाए।

निर्देशन के क्षेत्र में आनंद बंधुओं की सफलता का ग्राफ सबसे ज्यादा ऊंचा रहा। चेतन आनंद गंभीर निर्देशन के क्षेत्र में अग्रणी रहे, तो विजय आनंद ने मनोरंजक फिल्मों में खूब नाम कमाया। उनकी तरह देव आनंद भी निर्देशक बने, लेकिन हरे राम हरे कृष्ण और देस परदेस को छोड़कर तीसरी सफल फिल्म का निर्देशन नहीं कर पाए। संयोग से यह दोनों सफल फिल्में भाई - बहन और भाई भाई के प्रेम पर आधारित थी। वैसे तो राज कपूर के साथ शम्मी कपूर और शशि कपूर ने, रणधीर कपूर के साथ ऋषि और राजीव कपूर, फिरोज खान के साथ संजय खान और अकबर खान ने निर्देशन की परम्परा को आगे बढ़ाया लेकिन इनमें भी एक भाई सफल तो दूसरे भाई असफल रहे। अब्बास मस्तान भाईयों की जोडी जरूर निर्देशन के क्षेत्र में कुछ हद तक सफल रही।

हिंदी सिनेमा में राकेश रोशन और उनके छोटे भाई राजेश रोशन दोनों ने अपार सफलता पायी लेकिन दोनों के क्षेत्र अलग अलग थे। कुछ कलाकारों ने भाई होने का दायित्व सगा भाई न होने के बाद निभाया है। इनमें लता मंगेशकर सबसे ज्यादा भाग्यशाली थी जिन्हें मदन भैया, युसूफ भैया और मुकेश भैया का स्नेह मिला तो सलमान खान ऐसे अभिनेता है जिन्हें बॉलीवुड का भाई कहकर पुकारा जाता है। इसीलिए तो सभी की यही कामना होती है कि भाई हो तो सिनेमाई!

अमृत-प्याली है

मत समझो माँ चली गयी तो,पीहर खाली है।
जीजी मैके में तो तुमको पूजा-थाली है।

कथड़ी में ज्यों गुम्फित धागे,
यादें चलती आगे आगे,
हूक हिलोरों ने अन्तस की धरा हिला ली है।

हरियाली,गणगौर तीज में,
साँझा,गरबा,भाऊबीज में,
पल-पल, टप-टप, नयनों घुलते, काजल, लाली है।

रम्भाती है श्यामा गैया,
बहला रहे तुम्हारे भैया,
यादों से हर आँख हमारी, सावन वाली है।

दरवाजे स्वस्तिक निखरा है,
देहरी पर कुंकुम बिखरा है,
स्वस्तिकामना भी आँगन में रचा-बसा ली है।

गुल्लक है जैसी की तैसी,
रखी सीनरी भी है वैसी,
रखी धरोहर यादों की हर एक सम्भाली है।

राह तकें सावन के झूले,
पंछी लौटे जो घर भूले,
खबर तुम्हारे आने की, ऊषा की लाली है।

अस्फुट स्वर में माँ थी बोली,
मेरी मैना सबसे भोली,
रखना ध्यान जिंदगी भर, यह अमृत-प्याली है।

जीजी कुछ दिन पहले आना,
जीजू,बच्चों को भी लाना,
गुड़े की स्वप्निल मिठास, जीजू में पा ली है।

ज्योति दीप की धूप-गन्ध हो,
दोनों कुल की सेतुबन्ध हो,
राखी पर आ जाती हो तो, लगे दिवाली है।

भाई-बहन का प्रेम निराला
खिचड़ी में घी भी घर वाला
केशर गन्ध तुम्हारी भाभी ने ही डाली है।
- अशोक चन्द्र दुबे 'अशोक'

रक्षाबंधन : महकते रहें रिश्तों के ये पवित्र धागे सदा

रक्षाबंधन पर्व विशेष
अतुल गोयल
(लेखक न्यूयॉर्क की कंपनी में सॉफ्टवेयर डवलपमेंट इंजीनियर हैं)

रक्षाबंधन का पर्व रक्षा के तात्पर्य से बांधने वाला एक ऐसा सूत्र है, जिसमें बहनें अपने भाइयों के माथे पर तिलक लगाकर जीवन के हर संघर्ष तथा मोर्चे पर उनके सफल होने तथा निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर रहने की ईश्वर से प्रार्थना करती हैं तथा उनके सुखद जीवन के लिए मंगलकामना करती हैं। भाई इस कच्चे धागे के बदले अपनी बहनों की हर प्रकार की विपत्ति से रक्षा करने का वचन देते हैं और उनके शील एवं मर्यादा की रक्षा करने का संकल्प लेते हैं। वास्तव में भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक पर्व रक्षाबंधन स्नेह, सौहार्द एवं सद्भावना का एक ऐसा पर्व है, जो उन्हें अटूट एकता के सूत्र में बांध देता है। रक्षाबंधन पर्व इस वर्ष 9 अगस्त को मनाया जा रहा है। श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाए जाने वाले रक्षाबंधन पर्व की भारतीय समाज और संस्कृति में कितनी महत्ता है, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि बहनों के हाथ अपने भाइयों की कलाइयों पर राखियां बांधने के लिए मचल उठते हैं और कलाई पर बांधे जाने वाले मामूली से दिखने वाले इन्हीं कच्चे धागों से पक्के रिश्ते बनते हैं। पवित्रता तथा स्नेह का सूचक यह पर्व भाई-बहन को पवित्र स्नेह के बंधन में बांधने का पवित्र एवं यादगार दिवस है। इस पर्व को भारत के कई हिस्सों में श्रावणी के नाम से जाना जाता है।

पश्चिम बंगाल में 'गुरु महापूर्णिमा', दक्षिण भारत में 'नारियल पूर्णिमा' तथा नेपाल में इसे 'जनेऊ पूर्णिमा' के नाम से जाना जाता है। रक्षाबंधन मनाए जाने के संबंध में अनेक पौराणिक एवं ऐतिहासिक प्रसंगों का उल्लेख मिलता है। कहा जाता है कि जब देवराज इन्द्र बार-बार राक्षसों से परास्त होते रहे और हर बार राक्षसों के हाथों देवताओं की हार से निराश हो गए तो इन्द्राणी ने बहुत कठिन तपस्या की और अपने तपोबल से एक रक्षासूत्र तैयार किया। यह रक्षासूत्र इन्द्राणी ने देवराज इन्द्र की कलाई पर बांध दिया। तपोबल से युक्त इस रक्षासूत्र के प्रभाव से देवराज इन्द्र राक्षसों को परास्त करने में सफल हुए। तभी से रक्षाबंधन पर्व की शुरूआत हुई। एक उल्लेख यह भी मिलता है कि जब भगवान विष्णु ने वामन अवतार लिया था, तब उन्होंने एक ब्राह्मण वेश धारण कर अपनी दानशील प्रवृत्ति के लिए तीनों लोकों में प्रसिद्ध राजा बलि से तीन पग भूमि दान में मांगी और बलि द्वारा उनकी मांग स्वीकार कर लिए जाने पर भगवान वामन ने अपने पग से सम्पूर्ण पृथ्वी को नापते हुए बलि को पाताल लोक भेज दिया। कहा जाता है कि उसी की याद में रक्षाबंधन पर्व मनाया गया।

रक्षाबंधन पर्व से कई ऐतिहासिक प्रसंग भी जुड़े हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से इस पर्व की शुरूआत मध्यकालीन युग से मानी जाती है। भारतीय इतिहास ऐसे प्रसंगों से भरा पड़ा है, जब राजपूत योद्धा अपनी जान की बाजी लगाकर युद्ध के मैदान में जाते थे तो उनके देश की बेटियां उन वीर सैनिकों

की आरती उतारकर उनकी कलाई पर रक्षा सूत्र बांधा करती थी तथा वीर रस के गीत गाकर उनकी हौसला अफजाई करते हुए उनसे राष्ट्र की रक्षा का प्रण भी कराती थी। कहा जाता है कि उस जमाने में अधिकांश मुस्लिम शासक हिन्दू युवतियों का बलपूर्वक अपहरण करके उन्हें अपने हरम की शोभा बनाने का प्रयास किया करते थे और ऐसी परिस्थितियों से बचने के लिए राजपूत कन्याओं ने बलशाली राजाओं को राखियां भेजकर उनके साथ भ्रातृत्व संबंध स्थापित कर अपने शील की रक्षा करनी आरंभ कर दी थी। उसी परम्परा ने बाद में रक्षाबंधन पर्व का रूप ले लिया।

चित्तौड़ की महारानी कर्मावती का प्रसंग तो इस संबंध में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जब गुजरात के शासक बहादुरशाह ने चित्तौड़ पर आक्रमण कर दिया तो चित्तौड़ की महारानी कर्मावती घबरा गई। उन्हें चित्तौड़ के साथ-साथ स्वयं की तथा चित्तौड़ की अन्य राजपूत बालाओं की सुरक्षा का कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। कोई उपाय न सूझने पर रानी कर्मावती ने बादशाह हुमायूं को राखी के धागे में रक्षा का पैगाम भेजा और हुमायूं को अपना भाई मानते हुए उनसे अपनी सुरक्षा की प्रार्थना की। बादशाह हुमायूं महारानी कर्मावती का यह रक्षासूत्र और संदेश पाकर भाव विभोर हो गए और अपनी इस अनदेखी बहन के प्रति अपना कर्तव्य निभाने तुरन्त अपनी विशाल सेना लेकर चित्तौड़ की ओर रवाना हो गए लेकिन जब तक वह चित्तौड़ पहुंचे, तब तक महारानी कर्मावती और चित्तौड़ की हजारों वीरांगनाएं अपने शील की रक्षा हेतु अपने शरीर की अग्नि में आहुति दे चुकी थी। उसके बाद हुमायूं ने महारानी कर्मावती की राख से अपने माथे पर तिलक लगाकर बहन के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वहन किया। उन्होंने जो कुछ किया, वह इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया तथा इसी के साथ रक्षाबंधन पर्व के इतिहास में एक अविस्मरणीय अध्याय भी जुड़ गया। इस ऐतिहासिक घटना के बाद ही यह परम्परा बनी कि कोई भी महिला या युवती जब किसी व्यक्ति को राखी बांधती है तो वह व्यक्ति उसका भाई माना जाता है।

समय के साथ-साथ रक्षाबंधन पर्व के स्वरूप और मूल उद्देश्य में बहुत बदलाव आया है। तेजी से आधुनिकता की ओर अग्रसर आज के इस भागदौड़ भरे और स्वार्थपरक जमाने में जहां बहनों के लिए अब राखी का अर्थ भाई से महंगे उपहार तथा नकदी इत्यादि पाना हो गया है, वहीं भाई भी अपनी निजी जिन्दगी की व्यस्तताओं के चलते बहनों के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वहन सही ढ़ंग से नहीं कर पाते। ऐसे में यह पवित्र पर्व अब रुपये-पैसे तथा साड़ी, आभूषण व अन्य कीमती उपहारों इत्यादि के लेन-देन का पर्व बनता जा रहा है और भाई-बहन के बीच राखी का मोलभाव होने की वजह से धीरे-धीरे इस पर्व की मूल भावनाएं सिकुड़ रही हैं। कच्चे धागों की जगह रेशम के धागों ने ले ली और अब इन धागों की अहमियत कम होती जा रही है। रक्षाबंधन महज कलाई पर एक धागा बांधने की रस्म नहीं है बल्कि यह भाई-बहन के अटूट स्नेह, पवित्रता और सद्भावना का पर्व है। यह पर्व रिश्तों की पवित्रता और वचनबद्धता का प्रतीक है। इसलिए रक्षाबंधन पर्व को चंद रुपयों या कीमती उपहारों से तोलकर देखना इस पर्व के अंतस में विद्यमान पवित्र भावना का अपमान है।

संस्कृत दिवस
डॉ.मुरलीधर चाँदनीवाला

जर्मन कवि गेटे ने जब 'शकुंतला' का विज्ञापन किया

अठारहवीं सदी के अंतिम दौर में जर्मनी में जो कुछ घटित हुआ, वह जर्मनी के सांस्कृतिक इतिहास में तो महत्वपूर्ण था ही, उसने भारत की सांस्कृतिकचेतना को जगाने का भी काम किया। वर्ष 1789 में सर विलियम जोन्स महाकवि कालिदास-रचित 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' का अंग्रेजी अनुवाद कर चुके थे, इसके ठीक दो वर्ष बाद जॉर्ज फॉरेस्टर ने उस अनुवाद को जर्मनी भाषा में ज्यों का त्यों उतार दिया। जर्मन कवि गेटे वर्ष 1791 में जॉर्ज फॉरेस्टर का अनुवाद भर पढ़कर अभिभूत हो गये। गेटे ने पहली बार जाना, कि भारतीय साहित्य की चेतना का कद मापना आसान नहीं है। गेटे 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' का जर्मनी अनुवाद पढ़कर जितने अभिभूत हुए, उतने कभी शेक्सपियर के लिखे नाटकों को उसकी मूल भाषा में पढ़कर भी नहीं हुए थे। गेटे जब 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' का अनुवाद पढ़कर उठे, तब उन्होंने भाव-विभोर होकर लिखा-

'यदि तुम बसन्त के तरुण फूलों और ग्रीष्म के पके हुए फलों को एक साथ देखना चाहते हो, या तुम देखना चाहते हो उसे, जो एक ही साथ सुख दे, मोहित कर ले, आह्लादित करे और तृप्त भी कर दे; अथवा यदि तुम धरती और स्वर्ग को एक साथ देख लेना चाहते हो, तो मैं एक ही नाम बताता हूँ 'शकुन्तला'। वहाँ सभी प्रश्नों के उत्तर एक साथ विद्यमान हैं।'

गेटे की इन पंक्तियों ने उस दौर में 'शकुंतला' के जबरदस्त विज्ञापन का काम किया। इन पंक्तियों का गजब चमत्कार हुआ। बहुत थोड़े से अंतराल में ये पंक्तियाँ पूरे विश्व में घूम आईं। योरप के साहित्य जगत में हलचल मच गई। बड़े-बड़े साहित्य मनीषी और विचारक 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' का मूलपाठ देखने के लिये उतावले होने लगे। गेटे के इस भावपूर्ण उद्गारों का प्रभाव पाश्चात्य जगत पर ही पड़ा, ऐसा नहीं है। ये उद्गार जब भारत में आये, तो इनका जो स्वागत हुआ, वह भी बेमिसाल था। भारत के एक संस्कृत कवि ने गेटे की भावनाओं को इस मंजुल छंद में पिरो कर उसे विद्वान् आचार्यों के बीच फैला दिया-

'वासन्तं कुसुमं फलं च युगपद् ग्रीष्मस्य सर्वं च यत्
यच्चान्यन्मनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनं।
एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयो-
रैश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे! शाकुन्तलं सेव्यताम्।

गेटे ने अपनी बात को और अधिक जोरदार तरीके से सबके सामने रखते हुए एक खूबसूरत कविता जर्मनी में लिखी, जिसका अंग्रेजी अनुवाद एडवर्ड बेकहाउस इस्टविक ने किया। उस अनूदित कविता के भाव इस प्रकार है-

'तरुणाई भरे वर्ष का बसंत हो तुम,
तुम समूचे जीवन का प्रतिफल हो
तुम वह हो जिससे आत्मा मोहित,
मुदित, तृप्त और पोषित हो जाए।
धरती और स्वर्ग को अपने नाम में
समाहित कर लेती तुम एक साथ,
तुम्हारा नाम लूँ मैं, ओ शकुन्तला!
इस नाम में ही सब कुछ व्यक्त है।'

इस कविता ने भी वैसी ही धूम मचाई। यह कविता साहित्य में अभिरुचि रखने वाले असंख्य काव्य-रसिकों के हृदय में सीधे उतर गई, और वे बेसब्री से 'अभिज्ञान शकुंतलम्' का पाठ ढूँढने निकल पड़े, भले ही वह अंग्रेजी में अनूदित हो या जर्मनी में। यह महाकवि गेटे के भावपूर्ण विज्ञापन का ही चमत्कार रहा होगा, कि वर्ष 1793 के आसपास रूस में संस्कृत नाटक 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' का मंचन निकोलाई करामज़िन ने किया। तब इस नाटक की प्रस्तावना में 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' को 'अनुपम सौंदर्य की विलक्षण कविता' और 'श्रेष्ठतम कला का उदाहरण' बताया गया।

गेटे का संदेश बहुत साफ था। उसका असर विश्व भर में हुआ। न्यूयॉर्क की वेदान्त सोसाइटी ने 'अभिज्ञान शाकुंतलम' को 'आश्रमों की भूमि से आया हुआ एक आश्चर्य' कहा। शाकुंतलम् के अनुवाद अंग्रेजी और जर्मनी के अतिरिक्त फ्रेंच, इतालवी, रूसी सहित बहुत सी यूरोपीय भाषाओं में हुए। जगह-जगह शाकुंतलम् के मंचन भी होने लगे। वर्ष 1858 में पेरिस में हुआ शाकुंतलम् का मंचन इसलिये महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि वहाँ पहली बार लिब्रेट्टो और अर्नेस्ट रेयर के संगीत के साथ नाटक का बैले संस्करण प्रस्तुत किया गया था। इसके बाद वर्ष 1895 में आन्द्रे फर्डिनेन्ट हेराल्ड द्वारा किया गया 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' के रूपांतरण 'लैनउ डी शकुंतला' को पेरिस के थियेटर डी एल ओउवरे में प्रस्तुत किया गया। गेटे के विज्ञापन की शैली अनूठी थी, जिसने भारतीयों का भी मन मोह लिया। राजा लक्ष्मण सिंह ने 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' का हिन्दी अनुवाद किया। उसके बाद हिन्दी ही नहीं, अनेक भारतीय भाषाओं में 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' का अनुवाद करने की होड़ लग गई। वे अनुवाद आज भी मील का पत्थर माने जाते हैं। गेटे की पहल भारत के लिये भी वरदान सिद्ध हुई।

इससे पहले तक महाकवि कालिदास रचित 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' कुछ विद्वान् रसिकों के लिये ही कौतुक का विषय था। कालिदास के साहित्य पर मल्लिनाथ की टीकाएँ उपलब्ध थीं, वे पढ़ी जाती थीं, लेकिन 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' जैसे नाटक के मंचन की लोकव्यापी परम्परा नहीं थी। गेटे का साफ इशारा इस ओर था, कि शाकुंतलम् पढ़कर रख देने की पुस्तक नहीं है। वह भारत की आत्मा को कलात्मक अंदाज में व्यक्त होने का महाद्वार है। उन्होंने यह भी पाया कि विश्व भर में यही एक मात्र नाट्यकृति है, जो हमें भारत के आश्रमों के बीच रहते हुए लता-पादपों, मृगछौनों का सहचर बनाती है, और सुंदरता की खोज करते हुए उसके बहुत पास तक ले जाती है।

अब 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' की पोथी संस्कृत के पंडितों से घिरी हुई नहीं रही। हिन्दी, बंगला, मराठी, तमिल, मलयालम, उड़िया, गुजराती भाषाओं में और इनकी बोलियों में उसके बेहतरीन अनुवाद भी हुए, और मंचन भी। जगह-जगह औरअलग-अलग शैली में उसके प्रयोग होने लगे। कालिदास स्वयं अपने इस नाटक को प्रयोगविज्ञान कहते हैं। 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' के प्रथम अंक में वे कहते हैं- आ परितोषात् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्। 'जब तक विद्वज्जनों को संतोष नहीं हो जाता, तब तक मैं इस प्रयोगविज्ञान को सफल नहीं मानता।' यह एक ऐसी बात थी, जो नाटक को पाठ्यवस्तु होने से बचाकर उसे लोकधर्मी बनाती है। यह कालिदास की मौलिक स्थापना है, लेकिन इस पर सबसे पहले ध्यान गया जर्मन कवि गेटे का। जगह-जगह 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' के मंच सजने लगे,और संस्कृत में लिखे गये नाटक विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्निमित्रम्, स्वप्नवासवदत्ता, मृच्छकटिकम्, वेणीसंहारम्, मुद्राराक्षस के मंचन का पथ प्रशस्त हुआ। संस्कृत रंगकर्म की परम्परा को मानो पंख लग गये।

उन्नीसवीं सदी के अंत के साथ राष्ट्र के सांस्कृतिक पुनर्जागरण की जो लहर चली, उसने महाकवि कालिदास को विश्वकवि और विश्वकवि के रूप में स्थापित कर दिया। बीसवीं सदी के तीसरे दशक में उज्जैन स्थित महाकालेश्वर मंदिर के परिसर में पंडित सूर्यनारायण व्यास ने बहुत थोड़े से गुणी जनों को साथ में लेकर कालिदास समारोह का जो बीज बोया, वह एक तरह से स्वतंत्रता संग्राम के लिये उज्जैन के लोगों की सांस्कृतिक आहुति थी। पंडित जी ने भारत के स्वाभिमान को जगाने के लिये पूरी ताकत के साथ महाकवि कालिदास को आगे किया। भारतवासियों को कालिदास से परिचित कराने के लिये पंडित व्यास जी ने अथक परिश्रम किया। देश स्वाधीन हुआ, तब तक कालिदास की कीर्ति विश्व भर में फैल चुकी थी। पंडित जी ने कालिदास की दीपशिखा को जमकर थामे रखा। कालिदास और विक्रम की गाथाओं से भरे पड़े उनके लेख चाव से पढ़े जाने लगे थे, वे आज भी प्रामाणिक समझे जाते है।

उज्जैन में वर्ष 1958 में जब कालिदास समारोह की विधिवत शुरुआत हुई, तब वहाँ देश के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्रप्रसाद, श्रीमंत जीवाजीराव सिंधिया, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, पंडित ओंकारनाथ ठाकुर और रूस के संस्कृत विद्वान् वारान्निकोव आये थे। तब 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' का मंचन देखने के लिये राष्ट्रपति जी देर रात तक रुके थे। तब से लेकर अब तक विश्व के लगभग सभी बड़े देशों की नाटक मंडलियाँ अखिल भारतीय कालिदास समारोह के मंच पर 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' का मंचन कर चुकी हैं। आज विश्व के सांस्कृतिक मंच पर कालिदास के 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' की जो प्रतिष्ठा है,वह भारत के स्वाभिमान का प्रतीक-पुंज है।

वास्तव में पूरा 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' धरती और स्वर्ग का मिलन है। यह द्यावा और पृथ्वी के अंतर्सम्बंधों की कथा कहता है। यह नाटक प्राचीन ऋषिकुलों का एक खूबसूरत चित्र हमारे सामने खींच देता है। 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' की कहानी मनोरंजन की कहानी नहीं है। वहाँ स्थूल प्रेम की व्यंजना से कहीं अधिक वे तत्व हैं, जो प्राचीन भारत का गौरव-गान करते हैं। इसकी कथा में कई उत्तर-चढ़ाव हैं, कई रहस्य हैं, जो अब भी हमारे अभिज्ञान में नहीं हैं।

जर्मन कवि गेटे की छोटी सी कविता ने पूरे विश्व में चमत्कार कर दिखाया, जिससे कालिदास का भारत भी अछूता नहीं रहा। यह था एक भाषा के महान् कवि का दूसरी भाषा के महान् कवि को सम्मान देने का अनूठा उदाहरण। ऐसे उदाहरण दुर्लभ भी हैं, वन्दनीय भी।

संकट की घड़ी में सरकार आपके साथ : मुख्यमंत्री

बाढ़ प्रभावितों से सीएम ने किया सीधा संवाद, तीस करोड़ की राहत राशि बांटी

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश सरकार संकट की घड़ी में बाढ़ प्रभावित परिवारों के साथ है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को मुख्यमंत्री निवास समत्व भवन से प्रदेश के 28 हजार से अधिक बाढ़ प्रभावितों को 30 करोड़ की राशि का सिंगल क्लिक से अंतरण कर प्रभावितों से चर्चा कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शिवपुरी, गुना, दमोह, रायसेन, छिंदवाड़ा के बाढ़ प्रभावितों से वर्चुअली चर्चा की। उन्होंने प्रभावितों से बाढ़ के दौरान प्रशासन द्वारा किए गए प्रबंधों की जानकारी ली। शिवपुरी के श्री भागचंद, मऊगंज के श्री राधेश्याम साकेत, दमोह के श्री हेमराज, रायसेन के श्री गोविंद सिंह सेन, छिंदवाड़ा के श्री चंद्रमोहन सहित गुना और अन्य जिले के बाढ़ प्रभावितों ने बताया कि इस वर्षाकाल में जैसी बाढ़ आयी, वैसी पहले कभी नहीं आयी थी। प्रशासन के द्वारा बाढ़ के दौरान हम प्रभावित परिवारों को कैम्प लगाकर रहने की व्यवस्था के साथ भोजन आदि की व्यवस्था भी की गई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यह हमारे संस्कार ही हैं कि कष्ट की इस घड़ी में भी ग्रामीणजन अपनी बात विनम्रता के साथ कह रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस बार मानसून काल में अब तक 37 प्रतिशत अधिक वर्षा हो चुकी है, जिससे प्रदेश के कई क्षेत्रों में बाढ़ की स्थिति बनी।

बाढ़ की स्थिति में सहायता के लिए टोल फ्री नं-1079 पर सम्पर्क करें

उल्लेखनीय है कि प्रदेश में अब तक 729.1 एमएम वर्षा हो चुकी है, जो सामान्य से 37 प्रतिशत ज्यादा है, जो बहुत कम समय में तेजी से हुई। गुना, निवाड़ी, टीकमगढ़, मंडला एवं अशोकनगर में सर्वाधिक वर्षा दर्ज हुई। इस मानसून में अभी तक कुल 296 जनहानि तथा लगभग 1685 पशुहानि हुई है। साथ ही 299 मकानों पूर्ण रूप से क्षति होने की सूचना प्राप्त हुई है। लगभग 4114 मकानों में आंशिक क्षति भी हुई है। प्रदेश में अब तक 61 राहत कैम्प चलाये गये है, जिनमें 7345 लोगों को रखा गया। वर्तमान में मऊगंज में 02 राहत शिविर चालू है, जिसमें 175 लोग रह रहे हैं। प्रदेश में ज्यादातर सिंचाई डेम अभी 40 से 90 प्रतिशत के आस-पास भरे हैं एवं 04 डेम 100 प्रतिशत भरे हैं। साथ ही शासन द्वारा जनसामान्य को बाढ़ की स्थिति में 24-7 सहायता प्रदान की जाने के लिये टोल फ्री नं-1079 की व्यवस्था की गई है।

सामाजिक और धार्मिक संगठनों ने निभाई महत्वपूर्ण भूमिका

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सरकार ने वर्षाकाल में बाढ़ से निपटने के पहले से इंतजाम कर रखे थे। राज्य के मंत्रीगण और केन्द्रीय मंत्रीगण सभी से सम्पर्क बनाकर प्रदेश के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में बचाव कार्य के प्रबंधन की व्यवस्था की थी। उन्होंने कहा कि अतिवृष्टि और बाढ़ के संकट से निपटने के लिए एसडीआरएफ, एनडीआरएफ और सेना के जवानों की जहां आवश्यकता पड़ी, वहां सक्रिय किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अतिवृष्टि और बाढ़ से प्रभावितों को मदद करने में सामाजिक और धार्मिक संगठनों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मुख्यमंत्री ने इन संगठनों के प्रति आभार व्यक्त किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में भ्रमण के दौरान मिले अनुभवों को साझा करते हुए बताया कि शिवपुरी में दो व्यक्ति बाढ़ में 36 घंटे घिरे रहे और उन्हें प्रशासन ने बाढ़ से बाहर निकाला। इन व्यक्तियों का कहना था कि वे प्रशासन के प्रयासों से ही से बाढ़ से बाहर निकल सकें। इसी प्रकार गुना में बाढ़ प्रभावित महिलाओं से मिलने के दौरान सबसे पहले बहनों ने उन्हें राखी भेंट की। इसके बाद उन्होंने बाढ़ की बात कही। उन्होंने कहा कि बहनों ने अपने कष्ट की बात कहने से पहले राखी भेंट की, यह हमारी संस्कृति है।

अतिवृष्टि और बाढ़ के दृष्टिगत हमें रहना है सावधान

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वर्षा ऋतु अभी समाप्त नहीं हुई है। हमें अतिवृष्टि और बाढ़ के दृष्टिगत सावधान रहना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अतिवृष्टि और बाढ़ प्रभावितों को 28 करोड़ रूपए की राशि पहले दी जा चुकी है, 30 करोड़ की राशि आज दी गई है। उन्होंने कहा कि यह राशि फसल की क्षति को छोड़कर है। बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में फसल क्षति का सर्वे किया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि वर्ष 2025-26 में राहत के विभिन्न मदों में अब तक 123 करोड़ की राहत राशि प्रभावितों को वितरित की गई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आपदा प्रबंधन के लिए सभी जिलों को पर्याप्त राशि उपलब्ध कराई गई है। राजस्व मंत्री श्री करण सिंह वर्मा, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा राज्य मंत्री श्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल, प्रमुख सचिव राजस्व श्री विवेक पोरवाल इस अवसर पर मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में उपस्थित थे।

हर घर तिरंगा अभियान 2025 को बनाएं जन-आंदोलन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कुशल नेतृत्व में देश अपनी स्वतंत्रता के 'अमृत काल' में प्रवेश कर रहा है। अमृत काल में 'हर घर तिरंगा' अभियान 2025, राष्ट्रीय ध्वज को हर भारतीय के घर तक पहुंचाने वाला एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन है। यह हमारी साझा पहचान, स्वतंत्रता और एकता का एक भव्य उत्सव है, जो तिरंगे की भावना से ओत-प्रोत है। यह केवल एक प्रतीक नहीं, बल्कि हमारे राष्ट्र के सामूहिक गौरव और आकांक्षाओं का जीवंत प्रतिनिधित्व है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेशवासियों से 'हर घर तिरंगा' अभियान 2025 में पूरे उत्साह, गर्व और देशभक्ति की भावना के साथ बढ़-चढ़कर भाग लेने की अपील की है। यह अभियान 2 अगस्त से शुरू हुआ है जो 15 अगस्त 2025 तक चलेगा। यह देश की स्वतंत्रता और एकता का एक राष्ट्रव्यापी उत्सव है, जो हमारे गौरवशाली राष्ट्रीय ध्वज, तिरंगे की भावना से ओत-प्रोत है।

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2022 में 'आजादी का अमृत महोत्सव' के अहम भाग के रूप में शुरू हुआ। यह अभियान अब एक शक्तिशाली जन आंदोलन बन चुका है, जिसमें पूरे भारत और दुनिया भर के भारतीय ले रहे हैं। इसका लक्ष्य प्रत्येक नागरिक में देशभक्ति की भावना को जागृत करना और राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान को प्रगाढ़ करना है। तिरंगा, एक अद्वितीय और सार्वभौमिक रूप से मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में, एक शक्तिशाली एकीकृत शक्ति के रूप में कार्य करता है। यह अभियान प्रभावी ढंग से देशवासियों में अपनेपन की सामूहिक भावना को बढ़ावा देगा।

'हर घर तिरंगा' अभियान के इस वर्ष के 3 शक्तिशाली चरण- इस वर्ष 'हर घर तिरंगा' अभियान 2 अगस्त से शुरू होकर तीन शक्तिशाली चरणों में चलेगा, जिसमें जागरूकता निर्माण और जन जुड़ाव पर जोर दिया जाएगा।

अभियान के चरण और प्रमुख गतिविधियाँ

अभियान में पहले चरण 8 अगस्त तक जागरूकता बढ़ाने और तिरंगे की भावना को जन-जन तक पहुंचाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इसमें विद्यालयों और सार्वजनिक स्थानों पर तिरंगा पर केंद्रित रंगोली निर्माण, प्रमुख स्थानों पर तिरंगे के इतिहास और महत्व पर आधारित प्रदर्शनी, पुलिस कर्मियों और सैनिकों को राखियाँ और पत्र भेजना, शासकीय भवनों पर तिरंगा रौशनी से प्रकाशित करना आदि गतिविधियां हुईं। दूसरे चरण में 9 अगस्त से 12 अगस्त तक लोगों के बीच सामुदायिक जुड़ाव और सामूहिक भागीदारी को बढ़ावा दिया जाएगा। इसमें तिरंगा महोत्सव, सांस्कृतिक कार्यक्रम और तिरंगा रैलियाँ प्रमुख रूप से आयोजित की जाएंगी। इसके साथ ही सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर तिरंगा क्विज का आयोजन किया जाएगा। अंतिम और तीसरा चरण, 13 से 15 अगस्त तक, व्यक्तिगत स्तर पर देशभक्ति के प्रदर्शन पर केंद्रित रहेगा। इसमें घरों पर झंडा फहराना और तिरंगे के साथ सैल्फी अपलोड करना शामिल है।

अभियान में भाग लेने के सरल तरीके

'हर घर तिरंगा' अभियान में भाग लेना सरल और सभी के लिए खुला है। प्रदेशवासी तीन मुख्य तरीकों से इस राष्ट्रीय आंदोलन का हिस्सा बन सकते हैं -

स्वयंसेवक बनें: हरघर तिरंगा काम.पर पंजीकरण करें और तिरंगे का संदेश अपने परिवार, दोस्तों और समुदाय तक पहुंचाएं। दूसरों को सही ढंग से झंडा फहराने में मदद करें और तिरंगा सैल्फी साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एमपी में 7 दिन से थमा बारिश का दौर

अब तक 28.7 इंच दर्ज ; ग्वालियर में सबसे ज्यादा, इंदौर-उज्जैन में स्थिति ठीक नहीं

भोपाल (नप्र)। एमपी में पिछले 7 दिन से तेज बारिश का दौर थमा हुआ है। किसी भी जिले में तेज पानी नहीं गिरा। इससे गर्मी का असर बढ़ गया है। गुरुवार को 10 से ज्यादा जिलों में दिन का पारा 34 डिग्री के पार पहुंच गया। मौसम विभाग के अनुसार, अब तक प्रदेश में 28.7 इंच बारिश हो चुकी है, जो कुल बारिश का 77 प्रतिशत है। जून-जुलाई में स्ट्रॉन्ग सिस्टम की वजह से अब तक 37 प्रतिशत बारिश ज्यादा हो चुकी है। इसमें भी पूर्वी हिस्सा जैसे- जबलपुर, रीवा, सागर और शहडोल संभाग ठीक है।

इंदौर और उज्जैन संभाग की स्थिति ठीक नहीं है। इंदौर संभाग के 8 में से 5 जिले ऐसे हैं, जहां 13 इंच से कम पानी गिरा है। सिर्फ अलीराजपुर और झाबुआ में ही 20 इंच से ज्यादा पानी गिरा है। दूसरी ओर, ग्वालियर में सबसे ज्यादा 35 इंच बारिश हो चुकी है। यहां कुल बारिश का कोटा पूरा हो चुका है। जबलपुर और भोपाल की तस्वीर भी बेहतर है।

आज रक्षाबंधन पर 297 साल बाद खास संयोग

इस बार भद्रा से मुक्त रहेगा पर्व, देशभर में सबसे पहले महाकाल को अर्पित होगी राखी

उज्जैन (नप्र)। इस साल 9 अगस्त को देशभर में रक्षाबंधन खास संयोग के साथ मनेगा। भाई-बहन के प्रेम के प्रतीक का ये पर्व इस बार श्रवण नक्षत्र, सौभाग्य योग, करण, मकर राशि में चंद्रमा और पूर्णिमा तिथि में मनाया जाएगा। ज्योतिषीय गणनाओं के अनुसार, ऐसा योग 297 साल बाद बना है।

उज्जैन के ज्योतिषाचार्य पंडित अमर डिब्बेवाला ने कहा- ग्रहों की वर्तमान स्थिति 1728 में बने दुर्लभ संयोग को दोहरा रही है। रक्षाबंधन पर 8 ग्रह उन्हीं राशियों में रहेंगे, जिनमें 1728 में थे। इनमें सूर्य कर्क, चंद्र मकर, मंगल कन्या, बुध कर्क, गुरु और शुक्र मिथुन, राहु कुंभ और केतु सिंह राशि में रहेंगे। ऐसे अद्भुत योग शताब्दियों में एक बार ही बनते हैं। जिससे इस बार का रक्षाबंधन और भी पुण्य फलदायी माना जा रहा है।

वहीं, देशभर में सबसे पहले शनिवार तड़के 3 बजे बाबा महाकाल को राखी अर्पित की जाएगी। यह खास राखी हर वर्ष पुजारी परिवार की महिलाएं ही तैयार करती हैं। वे बाबा महाकाल को अपना भाई मानकर ये राखी बनाती हैं।

सवा लाख लड्डुओं का भोग लगेगा- महाकाल को अर्पित की जाने वाली राखी इस बार मंदिर समिति के अमर पुजारी के परिवार की महिलाएं बना रही हैं। वे तीन दिन से इसमें जुटी हैं। मखमल का कपड़ा, रेशमी धागा और मोती का उपयोग कर राखी पर भगवान गणेश को विराजित किया गया है। मान्यता है कि हिंदू रीति-रिवाज से मनाए जाने वाले सभी पर्वों की शुरुआत महाकाल मंदिर से ही होती है। भगवान महाकाल को राखी बांधने के बाद सवा लाख लड्डुओं का महाभोग अर्पित किया जाएगा। ये लड्डू शुद्ध देसी घी, बेसन, शक्कर और ड्रायफ्रूट्स से तैयार किए जा रहे हैं।बाबा महाकाल को बांधी जाने वाली राखी मखमल, रेशमी धागे और मोती से बनाई जा रही है।

पूरे दिन बांधी जा सकेगी राखी

पंडित अमर डिब्बेवाला ने बताया कि रक्षाबंधन पर शनिवार को दोपहर 2:43 बजे तक सर्वार्थ सिद्धि योग रहेगा। यह किसी भी काम को सफल बनाने के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है।

इस बार ये भी खास है कि रक्षाबंधन भद्रा काल से मुक्त रहेगा। मुहूर्त और चौघड़िए के अनुसार रक्षा सूत्र या राखी बांधी जा सकेगी। इस दृष्टि से सुबह से दोपहर 2:40 तक शुभ मुहूर्त में रक्षाबंधन का पर्व मनाया जा सकेगा।

सर्वार्थ सिद्धि योग भी इसी दिन

शनिवार को श्रवण नक्षत्र होने से सर्वार्थ सिद्धि योग बनेगा। इस योग का समय मध्याह्न 2:40 तक रहेगा। इस दौरान पर्व काल तो मनेगा ही इसके बाद भी सायं काल में शुभ योग रहेंगे, जिनमें रक्षा सूत्र बांधा जा सकेगा। इसके अलावा कुल परंपरा के अनुसार समय के निर्धारण से रक्षा सूत्र बांधना उचित होगा।

बीए की छात्रा ने फांसी लगाकर सुसाइड किया

पिता की मौत के बाद से डिप्रेशन में थी, पुलिस ने जांच शुरू की

भोपाल (नप्र)। भोपाल के अरेरा हिल्स इलाके में रहने वाली बीए फर्स्ट ईयर की छात्रा ने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। सुसाइड नोट नहीं मिलने से आत्महत्या के सही कारणों का खुलासा नहीं हो सका है। अरेरा हिल्स पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। घटना गुरुवार रात की है, शुक्रवार को बॉडी का पीएम कराया जा रहा है।

पुलिस के मुताबिक सुरभि सौंधिया (19) पुत्री स्वर्गीय विनोद सौंधिया एमएलबी कॉलेज से बीए फर्स्ट ईयर की पढ़ाई कर रही थी। तीन साल पहले उसके पिता की मौत हो गई थी। तब से ही युवती डिप्रेशन में रहने लगी थी। गुरुवार की रात मां किसी काम से घर से बाहर गई थी। इस दौरान सुरभि घर में अकेली थी।

जब वह लौटी तो घर का मेन गेट अंदर से लॉक था। काफी आवाजें देने के बाद भी जब गेट नहीं खुला तो मां ने पड़ोसियों को बताया। तब पड़ोसियों ने पुलिस को बुलाया और गेट को तोड़कर घर में प्रवेश किया। जहां बॉडी फंदे पर लटकी दिखी।

बॉडी का पोस्टमार्टम शुरू

पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर कमरे की तलाशी ली। तलाशी में सुसाइड नोट नहीं मिला है। पुलिस का कहना है कि परिजनों के डिटेल बयान अभी दर्ज नहीं किए जा सके हैं। शुक्रवार की सुबह हमीदिया अस्पताल में शव का पीएम कराया जा रहा है।

राज्यपाल ने प्रदेशवासियों को दीं रक्षाबंधन की शुभकामनाएं

भोपाल(नप्र)। राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने प्रदेशवासियों को रक्षाबंधन के पावन पर्व की बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने अपने संदेश में कहा है कि राखी का पर्व, भाई-बहन के स्नेह और विश्वास का त्यौहार है। यह हमारी गौरवशाली संस्कृति के गरिमामय उत्कर्ष का प्रतीक है। भाई-बहन के पवित्र प्रेम, पारिवारिक समरसता और सामाजिक सद्भाव की प्रेरणा का उत्सव है। उन्होंने कहा कि राखी के पर्व पर हमें मातृ शक्ति के सम्मान, सहयोग और सशक्तिकरण में सहभागिता का संकल्प लेना चाहिए।

रक्षाबंधन पर भोपाल की सड़कों पर डायवर्ट रहेगा ट्रैफिक

पुराने शहर के बाजारों में चार पहिया वाहन ले जाने पर प्रतिबंध

भोपाल (नप्र)। रक्षाबंधन पर शहर के प्रमुख बाजारों में खरीदी करने वालों की भीड़ को देखते हुए भोपाल ट्रैफिक पुलिस ने शनिवार (9 अगस्त) को पार्किंग और यातायात व्यवस्था में बदलाव किया है। जुमेराती, चौक बाजार, न्यू मार्केट, 10 नंबर मार्केट, बैरागढ़ समेत कई इलाकों में एक दिन के लिए अलग-अलग रूट डायवर्जन और पार्किंग स्थल तय किए गए हैं।

पुलिस का कहना है कि भीड़ और जाम से बचने के लिए लोग अधिक से अधिक सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करें और वाहन केवल निर्धारित पार्किंग स्थलों पर ही खड़े करें।

पुराना शहर में लोडिंग व चार पहिया वाहनों की एंट्री बंद

- जनकपुरी, जुमेराती, छोटे भैया चौक, घोड़ा नक्कास चौक, हनुमानगंज और आजाद मार्केट जैसे भीड़भाड़ वाले आंतरिक बाजारों में त्योहार के दिन लोडिंग वाहन, ऑटो रिक्शा और चार पहिया वाहनों का प्रवेश बंद रहेगा।
- करोंद, डीआईजी बंगला, सिंधी कॉलोनी और शाहजहांनाबाद से आने वाले चार पहिया वाहन भोपाल टॉकीज चौराहे से बाल विहार ग्राउंड में पार्क होंगे।
- भारत टॉकीज की ओर से आने वाले दोपहिया वाहन सेंट्रल लाइब्रेरी मैदान में पार्क किए जाएंगे।
- संगम टॉकीज से सब्जी मंडी होकर आने वाले तीन और चार पहिया वाहन सब्जी मंडी परिसर में पार्क होंगे।
- लखेरापुरा, इतवारा, मारवाड़ी रोड, इब्राहिमपुरा से चौक बाजार जाने वाले वाहनों की एंट्री बंद रहेगी। इन्हें सरस्वती स्कूल के पास मल्टीलेवल पार्किंग और सदर मंजिल के पास पार्क किया जाएगा।

10 नंबर मार्केट में वन-वे ट्रैफिक

भीड़ के समय वंदेमातरम् चौक से 10 नंबर मार्केट की ओर जाने वाले वाहन केवल 10 नंबर मार्केट तिराहे होते हुए नेशनल अस्पताल तक ही जा सकेंगे। इसी तरह साढ़े 10 नंबर स्टॉप से भी यही रूट रहेगा। नेशनल अस्पताल से 10 नंबर मार्केट और वंदेमातरम् चौक की ओर सीधा आवागमन बंद रहेगा।

न्यू मार्केट, एमपी नगर और बैरागढ़ में तय पार्किंग

न्यू मार्केट में मल्टीलेवल पार्किंग (टीटी नगर थाने के पास) का उपयोग करना होगा। भीड़ बढ़ने पर रंगमहल चौक से थाना चौक और टीटी क्रॉस से थाना चौक की ओर यातायात डायवर्ट किया जाएगा। एमपी नगर जोन-1 और बैरागढ़ (चंचल चौक) में भी मल्टीलेवल पार्किंग का उपयोग करना अनिवार्य होगा।

व्यापारियों से अपील

पुलिस ने कहा है कि व्यापारी माल लोडिंग- अनलोडिंग का काम केवल रात 12 बजे से सुबह 7 बजे के बीच करें। वहीं निर्धारित स्थानों पर ही वाहन पार्क करें, जिससे जाम से बचा जा सके। भीड़भाड़ से बचने के लिए सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना बेहतर होगा।

कुबेरेश्वर धाम आयोजन में प्रशासन की सीधी चूक

गृह विभाग की गाइडलाइन का नहीं कराया पालन, नहीं थे जनसैलाब को कंट्रोल करने के इंतजाम

भोपाल (नप्र)। सीहोर जिले के कुबेरेश्वर धाम में रुद्राक्ष के लिए पहुंचने वाली लाखों लोगों की भीड़ और कांवड़ यात्रा में उमड़े जन सैलाब को कंट्रोल करने के मामले में सीहोर कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक ने गृह विभाग द्वारा जारी गाइडलाइन का पालन नहीं कराया है। आयोजक और प्रशासन की अदूरदर्शिता के चलते इस साल यहां पहुंचे सात श्रद्धालुओं की मौत हो चुकी है और भीड़ कंट्रोल नहीं होने से ट्रैफिक डायवर्जन और अन्य प्रयास नाकाफी साबित हुए हैं।

एक साल पहले गृह विभाग द्वारा जारी एसओपी में सामाजिक और धार्मिक आयोजनों के दौरान प्रबंधन और समुचित सुरक्षा पर फोकस करने के लिए पुलिस अधीक्षक, पुलिस आयुक्त नगरीय क्षेत्र भोपाल, इंदौर और सभी कलेक्टरों को निर्देश जारी किए गए थे। गृह सचिव गौरव राजपूत ने 4 जुलाई 2024 को जारी निर्देशों में साफ कहा है कि ऐसे आयोजनों के दौरान अव्यवस्था, भगदड़ और अन्य दुर्घटनाओं की स्थिति रोकने के लिए गाइडलाइन का कड़ाई से पालन कराया जाए।

14 बिन्दुओं की गाइडलाइन में साफ कहा गया है कि आयोजन के पूर्व आयोजकों द्वारा हर 500 व्यक्तियों की भीड़ पर समुचित

सेवादारों का प्रबंध किया जाए। इन सेवादारों के अलावा पुलिस प्रशासन भी अपने बल से भीड़ और भगदड़ रोकने के लिए प्रभावी नियंत्रण करेगा। कुबेरेश्वर धाम में इसकी कमी साफ दिखी है। यहां के मुख्य सेवादार विनय मिश्रा और सहयोगियों के अनुसार उनके पास 140 सेवादार हैं जो लाखों की भीड़ के हिसाब से नाकाफी हैं।

प्रवेश-निकासी के लिए श्रद्धालुओं की संख्या तय होनी चाहिए- बड़े धार्मिक आयोजनों में आने वाली भीड़ को कंट्रोल करने के लिए आने-जाने के रास्तों की व्यवस्था मजबूत रखने के साथ बैरिकेटिंग के लिए भी कहा गया है। साथ ही आमने-सामने से आ रहे लोगों की भीड़ रोकने के लिए भी प्रबंध करने को कहा गया है। एसओपी में यह भी कहा गया है कि संकरे प्रवेश और निकास मार्गों की स्थिति में आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या तय कर प्रवेश निकासी कराई जाए, लेकिन कुबेरेश्वर धाम में इस तरह का कोई इंतजाम नहीं है। जिसे जहां से रास्ता मिला चल दिया। इससे अव्यवस्था की स्थिति बनती जा रही है।

गाइडलाइन में यह कहा गया है कि जहां भी कार्यक्रम हों वहां आने-जाने के लिए अलग-अलग मार्ग होना चाहिए और महिला व पुरुष की अलग लाइन होना चाहिए। अगर आने-जाने का एक ही द्वार है तो अस्थायी द्वार बनाकर खतरे को कम करना है। इसका भी कुबेरेश्वर धाम में पालन नहीं हो रहा है।

भीड़ का प्रेशर रिलीज करने इंतजाम नहीं, पार्किंग भी नाकाफी

धार्मिक आयोजन स्थल पर आपात स्थिति में भगदड़ रोकने के लिए आपातकालीन द्वार और प्रेशर रिलीज पाइंट बनाने की बात भी एसओपी में कही गई है लेकिन इसका भी कोई प्रबंध कुबेरेश्वर धाम में नहीं रहा है। गाइडलाइन में कहा गया है कि यहां आयोजन हो वहां पर यातायात प्लान और पर्याप्त पार्किंग व्यवस्था होनी चाहिए। कुबेरेश्वर धाम लाखों लोग लाखों वाहन से पहुंचे हैं लेकिन पार्किंग के इंतजाम न होने से अफरा तफरी मचती रही है। इस मामले में प्रशासन के इंतजाम भी नाकाफी साबित हुए हैं।

उपहार वितरण का समुचित इंतजाम नहीं, अफसर रोक नहीं पाए

एसओपी में यह भी कहा गया है कि उपहार, भोजन, प्रसाद, कम्बल आदि के मुफ्त वितरण के दौरान भगदड़ रोकने के लिए इंतजाम होना चाहिए। अधिक भीड़ होने पर सामग्री के वितरण पर प्रतिबंध लगाने के लिए पुलिस अधीक्षक और कलेक्टर की ओर से निर्देश दिए जाने को कहा गया है लेकिन सीहोर कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक इस स्थान पर बांटे जा रहे रुद्राक्ष के वितरण को लेकर बन रही अव्यवस्था पर कंट्रोल नहीं कर पाए हैं। एसओपी में साफ कहा गया है कि बड़े आयोजनों में सांप, बम आदि अफवाहों से होने वाली भगदड़ की स्थिति को रोकने के लिए पर्याप्त लाउडस्पीकर, ध्वनि यंत्र होने चाहिए जो यहां की भीड़ के हिसाब से नाकाफी है।